ओ३म्

सत्यार्थ सौरभ

मासिक

अप्रैल-२०२६

अप्रैल-२०२६ ◆ वर्ष १४ ◆ अंक १२ ◆ उदयपुर

तेरे इक-इक शब्द में,
मानवता का प्यार था।
अमन का तू देवता था,
सत्य का अवतार था।।

सत्य स्थल, अजमेर

शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति को समर्पित

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
नवलखा महल परिसर, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग,
उदयपुर-313001 (राज.)

₹१५ १७४

भारत के सरताज

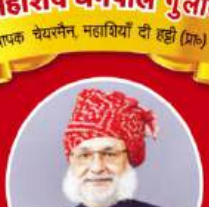

महाशय राजीव गुलाटी
चेयरमैन, महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लि०

MDH मसाले

सेहत के रखवाले असली मसाले सच-सच

For More Information Visit us on :

mdhspicesofficial | mdhspicesofficial | mdhspicesofficial | SpicesMdh

www.mdhspices.com

SCAN FOR MDH ORIGINAL RECIPES

सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को अपने आँचल में समेटे, सम्पूर्ण परिवार के लिए, हर आयु समूह के लिए, पठनीय और समर्पित

न्यास का मासिक मुखपत्र

सत्यार्थ सौरभ

प्रमुख संरक्षक - सत्यार्थ सौरभ

डॉ. सुखदेव चन्द सोनी (अमेरिका)

परामर्शदाता संपादक मण्डल

डॉ. महावीर मीमाँसक

डॉ. ज्वलन्त कुमार शास्त्री

डॉ.सोमदेव शास्त्री

डॉ. रघुवीर वेदालंकार

आचार्य वेदप्रिय शास्त्री

सम्पादक

अशोक आर्य

प्रबन्ध सम्पादक

भवानी दास आर्य

प्रबन्ध सहयोग (ग्राफिक्स डिजाईनर)

नवनीत आर्य (मो. 9314535379)

व्यवस्थापक

भँवर लाल गर्ग

सहयोग ◆	भारत	विदेश
संरक्षक	11000 रु.	$ 1250
आजीवन	1500 रु.	$ 300
पंचवर्षीय	600 रु.	$ 125
वार्षिक	150 रु.	$ 30
एक प्रति	15 रु.	$ 10

भुगतान राशि धनादेश/चैक/ड्राफ्ट श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें। अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया मेन ब्रांच दिल्ली गेट, उदयपुर खाता संख्या : 310102010041518 IFSC CODE- UBIN 0531014 MICR CODE- 313026001 में जमा करा अवश्य सूचित करें।

सृष्टि संवत्
१९६०८५३१२६
चैत्र कृष्ण पंचमी
विक्रम संवत्
२०८३
दयानन्दाब्द
२०२

April- 2026

०४	वेद सुधा
०९	अदृश्य भी दीखता है
१७	साकार ईश्वर पौराणिकों का भ्रम
२१	मनुष्य का वास्तविक रूपान्तरण
२४	सत्यार्थ मित्र बनें
२५	स्वास्थ्य- कब्ज (विबन्ध)
२७	कथा सरित- कहानी दयानन्द की
२८	प्रतीक बक्शी एक मौन साधक
२९	समाचार
३०	हलचल

सत्यार्थ-सौरभ में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र उदयपुर ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

विज्ञापन शुल्क (प्रति अंक)

कवर 2 व 3 (भीतरी आवरण) रंगीन 5000 रु.

अन्दर पृष्ठ (श्वेत-श्याम)

पूरा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	3000 रु.
आधा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	2000 रु.
चौथाई पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	1000 रु.

स्वामी: श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर

वर्ष - १४ अंक - १२

मुद्रण: द्वारा - चौधरी ऑफसेट, (प्रा.लि.) ११-१२, गुरु रामदास कॉलोनी, उदयपुर

प्रकाशक

श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास

सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, गुलाबबाग, उदयपुर (राजस्थान) 313001

(0294) 4017298, 09314535379, 7976271159

www.satyarthprakashnyas.org, E-mail : satyarthsandesh@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा निदेशक– मुकेश चौधरी, चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर–313001 से प्रकाशित, सम्पादक–अशोक कुमार आर्य

ओ३म्

वेद सुधा

वृद्धों का लाठी परमेश्वर

आ त्वा रम्भं न जिव्रयो ररम्भा शवसस्पते।
उश्मसि त्वा सधस्थ आ।। - ऋग्वेद ८/४५/२०

ऋषि– त्रिशोकः काण्वः।। **देवता**– इन्द्रः।। **छन्दः**– गायत्री।।

विनय– हे भगवन्! मैं बुड्ढा हूँ और तुम मेरी लाठी हो। तुम मेरे सहारे हो। मेरा इस जन्म का यह देह चाहे वृद्ध न दीखता हो, परन्तु मैं सच्चे अर्थ में जीर्ण हूँ, पुराना हूँ, अतएव अनुभवी हूँ। मैं न जाने कितनी योनियों में फिरा हूँ- सब संसार भोग चुका हूँ, परन्तु अब मैं तुम्हें **'शवसस्पते'** करके सम्बोधन करता हूँ, क्योंकि मैंने सुदीर्घ अनुभव से जान लिया है कि सब बलों के स्वामी तुम्हीं हो। मैंने कभी बड़ा धनाढ्य होकर धनबल का अभिमान किया है, किसी समय यह समझा है कि मेरे साथ इतना बड़ा दल है, अतः जो मैं चाहूँ कर सकता हूँ; इस प्रकार दलबन्दी के बल को भी आजमाया है; कभी अपने बुद्धि-बल, चतुराई-बल के मुकाबले में, सब संसार को तुच्छ समझा है। शरीर-बलों और शस्त्र-बलों का तो कहना ही क्या है! पर इतने लम्बे, अनगिनत योनियों के सुदीर्घ अनुभवों के बाद जीर्ण होकर- पुराना होकर अब समझा है कि सब बलों के स्वामी तो तुम हो। इसलिए अब और सब बलों का सहारा छोड़कर एक तुम्हारा सहारा पकड़ लिया है। हे मेरे एकमात्र बल! तुम मुझसे अब क्षणभर के लिए भी दूर मत होओ। अब यदि मैं क्षणभर के लिए भी तुमको भूल जाता हूँ- अपने मानसिक विचार-नेत्र के सामने से क्षणभर के लिए भी तुम्हें ओझल पाता हूँ, तो मैं व्याकुल हो जाता हूँ- एकदम निस्सहाय हो जाता हूँ, अतः अब तो सतत् यही कामना है कि तुम सदा ही मेरे सामने और मेरे साथ ही बने रहो। बुड्ढे की लाठी जब आँखों के सामने पड़ी हो, पर उसकी पहुँच के परे पड़ी हो, तब तो उसका सहारा न पा सकते हुए उसका दीखना बुड्ढे के लिए और भी दुःखदायक हो जाता है। इसलिए हे मुझ वृद्ध की लाठी!

हे मुझ निर्बल के बल! हे मेरे एकमात्र सहारे! तुम अब सदा मेरे साथ रहो- सधस्थ बने रहो। तुमसे तनिक भी दूर होकर, अब मैं नहीं रह सकता।

शब्दार्थ– **शवसः पते**= हे सब बलों के स्वामिन्! **जिव्रयः**= बुड्ढा पुरुष **रम्भं न**= जैसे डण्डे को **त्वा**= उस प्रकार तेरा मैंने **ररम्भ**= अवलम्बन कर लिया है और अब मैं **त्वा**= तुझे **सधस्थे**= अपने समान स्थान में **आ**= आमने-सामने-आँखों के सामने **उश्मसि**= चाहता हूँ- देखना चाहता हूँ।

- आचार्य अभयदेव विद्यालंकार
परिशोधक एवं सम्पादक- स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती
साभार- वैदिक विनय

आत्म निवेदन

युद्धस्य फलम् अश्रु, विनाशः, शून्यता च

युद्धेन हि विनश्यन्ति कुलानि सह बान्धवैः।
धर्मो नश्यति नष्टेषु, सर्वं नश्यति नाशिते॥

जब हम युद्ध के बारे में सोचते हैं, और विशेष रूप से पिछले चार-पाँच वर्षों से जिस प्रकार पूरा विश्व युद्ध रूपी काल के जबड़े में फँसा हुआ प्रतीत होता है, तो मन में स्वाभाविक प्रश्न उठता है, क्या ये सारे सत्ताधीश यह नहीं जानते कि युद्ध का अन्त केवल और केवल विनाश है? क्योंकि इतिहास बताता है कि विश्व में प्रत्येक युद्ध का यही परिणाम रहा है। जब यह सिद्ध बात है जिसे वे जानते हैं, तो फिर युद्धप्रिय क्यों?

आज रूस-यूक्रेन युद्ध को चार वर्ष से भी अधिक समय हो चुका है। मान लीजिए कि अगले कुछ समय में यह युद्ध रुक भी जाए, तो यूक्रेन के पुनर्निर्माण में कम से कम ४० वर्ष लगेंगे। अर्थात् एक प्रकार से मानवता का विकास ४० वर्ष पीछे चला गया। लाभ क्या हुआ? क्या रूस को कोई स्थायी लाभ मिला? क्या यूक्रेन को कोई लाभ हुआ? उत्तर स्पष्ट है, नहीं।

आइंस्टीन की चेतावनी

Albert Einstein ने युद्ध की विनाशकारी परिणति को देखते हुए कहा था-

"I know not with what weapons World War III will be fought, but World War IV will be fought with sticks and stones."

(मुझे नहीं पता कि तीसरा विश्वयुद्ध किन हथियारों से लड़ा जाएगा, लेकिन चौथा विश्वयुद्ध लाठियों और पत्थरों से लड़ा जाएगा।)

यह कथन परमाणु युद्ध की भयावहता के सन्दर्भ में था कि यदि तीसरा विश्वयुद्ध परमाणु हथियारों से हुआ, तो सभ्यता इतनी नष्ट हो सकती है कि मानव पुनः आदिम अवस्था में लौट जाए। क्या आज की परिस्थितियाँ उसी दिशा में संकेत नहीं कर रहीं?

युद्ध की ओर कदम बढ़ाने वाले प्रत्येक राष्ट्र को युद्ध अन्तिम उपाय के रूप में अपनाना चाहिए। उसे स्वयं से प्रश्न करना चाहिए कि क्या युद्ध अपरिहार्य है?

क्या वास्तव में युद्धरत देशों के सामने ऐसी अपरिहार्य स्थिति आ गई थी कि मानवता और पर्यावरण के विनाश का मार्ग चुनना ही एकमात्र विकल्प रह गया था? सत्य अन्वेषण पर उत्तर नकारात्मक ही होगा।

"अपने देश की प्रगति को छोड़ आप दूसरे देश की जमीन और संसाधनों पर लार क्यों टपका रहे हैं?"

मेरा यह प्रश्न किसी एक राष्ट्र से नहीं, बल्कि उस मानसिकता से है जो विकास की बजाय विस्तार को चुनती है। इतिहास साक्षी है कि अधिकांश बड़े युद्ध सीमाओं की रक्षा से अधिक संसाधनों, सामरिक प्रभुत्व और आर्थिक वर्चस्व की चाह में लड़े गए। इन उद्देश्यों को भारी-भरकम शब्दों में छिपाया जाता है, परन्तु लालच छिप नहीं पाता। गहराई से विचार करें तो लालच, अहंकार और सत्ता का मद ही इनके मूल में दिखाई देता है।

यह प्रश्न भी उठ सकता है कि क्या युद्ध केवल आधुनिक युग की देन है?

ऐसा नहीं है कि युद्ध केवल पिछले १००, २०० या १००० वर्षों में ही हुए हों। युद्ध तो प्राचीन काल से होते आए हैं। त्रेता में श्रीराम और रावण का युद्ध, तथा द्वापर के अन्त में महाभारत।

परन्तु यदि इनका विश्लेषण करें तो एक केन्द्रीय तत्व स्पष्ट होता है 'जब शासन बेईमान, निरंकुश और जनविरोधी हो जाता है, तब उसे सत्ता पर बने रहने का अधिकार नहीं रह जाता। प्राचीन भारतीय मनीषा ने राज्य का उद्देश्य प्रजा-पालन माना है। प्रजा की सर्वोच्च उन्नति शान्ति के वातावरण में ही सम्भव है। युद्ध के वातावरण में विकास कदापि सम्भव नहीं। एक साधारण उदाहरण लें। आपने विशाल विश्वविद्यालय बनाए, बच्चों के विकास हेतु आधुनिक संस्थान स्थापित किए। और युद्ध हुआ; एक छोटा सा ड्रोन आकर दशकों की मेहनत को सेकंडों में मिट्टी में मिला देता है।

अधर्म और सत्ता परिवर्तन

यदि शासक अधर्म के मार्ग पर चल पड़े तो उसकी पदच्युति आवश्यक हो जाती है। जनता अत्याचारों से त्रस्त हो जाए तो मुक्ति के दो मार्ग होते हैं-

पहला- आन्तरिक विरोध और सत्ता परिवर्तन; दूसरा- बाह्य हस्तक्षेप।

उदाहरणार्थ, सेनानी पुष्यमित्र शुंग। सम्राट अशोक के पश्चात् मौर्य साम्राज्य दुर्बल हो चुका था। उत्तर-पश्चिम से इंडो-ग्रीक आक्रमण का खतरा था। अति भीरु शासक बृहद्रथ का अन्त कर पुष्यमित्र ने स्वयं को सम्राट घोषित किया और ३६ वर्ष तक स्थिर शासन किया। इसमें किसी विदेशी का क्या कार्य?

रामायण का आदर्श

श्रीराम ने १३ वर्ष वनवास में बिताए तब तक उन्होंने लंका विजय की कोई योजना नहीं बनाई थी। रावण ने माता सीता का अपहरण किया; तब धर्म और सम्मान की रक्षा एवं अन्याय के प्रतिकार हेतु युद्ध हुआ। विजय के पश्चात् भी उन्होंने लंका पर शासन नहीं किया, अपितु विभीषण को राज्य सौंप दिया।

उन्होंने कहा-

अपि स्वर्णमयी लंका, न मे, लक्ष्मण, रोचते।
जननी, जन्मभूमिः च, स्वर्गात् अपि, गरीयसी।

भावार्थ- हे लक्ष्मण! यद्यपि लंका स्वर्णमयी है, तथापि मुझे वह प्रिय नहीं है। जननी और जन्मभूमि स्वर्ग से भी श्रेष्ठ होती है।

यह श्लोक रामायण में श्रीराम के आदर्शों को प्रकट करता है, मातृभूमि और माता का महत्व किसी भी भौतिक वैभव से अधिक है। यहाँ लालच नहीं, अन्याय का प्रतिकार है।

महाभारत का सन्देश

महाभारत का युद्ध दो कुलों का संघर्ष मात्र नहीं था; वह अहंकार और धर्मबुद्धि का टकराव था। दुर्योधन का कथन- "सुई की नोक के बराबर भूमि भी नहीं दूँगा" उसके

युद्ध के आखिर में जला हुआ जमीन का टुकड़ा होगा

युद्ध के आखिर में,
एक जला हुआ
जमीन का टुकड़ा होगा।
बारूद की फसल
गल गई होगी,
सैकड़ों बदबूदार
जिस्म फैले होंगे,
जमीन के ऊपर, जिन्हें
कब्रें नसीब नहीं हुई।
जले जिस्म,
हथियार और घर,
सब गड्ड-मड्ड हो जायेंगे
एक-दूसरे के साथ।
और आखिर में तुम,
दुआ मांगोगे उनकी
शान्ति के लिए,
प्रार्थनाएँ करोगे और
मोमबत्तियाँ जलाओगे।
आने वाली पीढ़ियों को
सुनाओगे सदियों तक,
उस अनचाहे
युद्ध की दास्तां,
जो कभी न चाहा था,
उस जली हुई जमीन ने,
उन सड़े हुए
जवान जिस्मों ने,
और एक उजड़ी हुई
सभ्यता ने,
एक युद्ध जिसे,
सभ्य दुनिया ने थोपा था,
सभ्यता के खिलाफ।

- प्रवीण चौबे, चण्डीगढ़

अहंकार का परिचायक था।
दुर्योधन खुलकर कहता है-
जानामि धर्मं न च मे प्रवृत्तिः जानाम्यधर्मं न च मे निवृत्तिः।
केनापि देवेन हृदि स्थितेन यथा नियुक्तोऽस्मि तथा करोमि।।
ऐसे शासक के रहते युद्ध अवश्यंभावी हो जाता है।
विनाश हुआ, परंतु वह अन्याय के अन्त के लिए था। फिर भी उस विनाश की भरपाई में आर्यावर्त्त को शताब्दियाँ लगीं।
युद्ध का दुष्परिणाम सर्वव्यापी और सर्वग्रासी होता है।

आधुनिक युद्ध और दोहरे मापदण्ड

आज के युग में, जब प्रत्येक राष्ट्र की संप्रभुता का सम्मान किया जाना चाहिए और जब अन्तर्राष्ट्रीय कानून स्पष्ट कहता है कि आत्मरक्षा या संयुक्त राष्ट्र की अनुमति के बिना आक्रमण अनुचित है, तब भी सशस्त्र हस्तक्षेप हो रहे हैं। United Nations का उद्देश्य क्या है, यदि वह राष्ट्रों की संप्रभुता की रक्षा न कर सके? संक्षेप में कुछ युद्ध, उनके कारक और परिणाम पर दृष्टि डालें-
वियतनाम में कम्युनिस्ट विचारधारा समाप्त करने के नाम पर आक्रमण हुआ। लाखों लोग मारे गए। एजेंट ऑरेंज से पीढ़ियाँ प्रभावित हुईं। पर्यावरण नष्ट हुआ।
इराक में "Weapons of Mass Destruction" के नाम पर सद्दाम हुसैन का अन्त किया गया। ऐसे हथियार मिले? जी नहीं। स्पष्ट है असत्य के आधार पर इतना विनाश किया गया। क्या यह दोहरा मापदण्ड नहीं? युद्ध पिपासुओं को किसी ने कुछ कहा? जी नहीं।
एक ओर परमाणु हथियारों से युक्त राष्ट्रों को सहन किया जाता है। पाकिस्तान जैसे आतंकी मानसिकता वाले देश के पास तो परमाणु बम कदापि नहीं होने चाहिए, पर उसे हर समय पुचकार लिया जाता है, दूसरी ओर अन्य देशों पर कठोर प्रतिबन्ध लगाए जाते हैं। यह "might is right" की नीति नहीं तो और क्या है?
भय और आशंका की राजनीतिः कभी-कभी युद्ध वास्तविक खतरे से अधिक आशंका पर आधारित होते हैं। यदि ७०% सम्भावना ही नहीं कि पड़ोसी आक्रमण करेगा, तो क्या आशंका मात्र से युद्ध उचित हो जाता है?
यूक्रेन-रूस विवाद को ही लें। यदि संवाद और सन्तुलन से समाधान खोजा जाता, तो क्या लाखों लोगों का विस्थापन और मृत्यु टाली नहीं जा सकती थी?
हथियार निर्माता और उनके देश को युद्ध और तनाव के समय जो लाभ होता है इस कारण से इस तथ्य से विरत नहीं रहा जा सकता कि ये उद्योग भी नीति निर्माता को प्रभावित करते हैं। यह एक स्थापित तथ्य है कि युद्ध और भू-राजनीतिक तनाव के समय हथियारों की माँग बढ़ती है, और रक्षा उद्योग की आय भी बढ़ती है।
Stockholm International Peace Research Institute (SIPRI) के अनुसार हाल के वर्षों में वैश्विक सैन्य व्यय ऐतिहासिक उच्च स्तर पर पहुँचा है, और रक्षा कम्पनियों की कुल बिक्री में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। इस रिपोर्ट के अनुसार लगभग ५८ लाख करोड़ रुपये वैश्विक रक्षा बिक्री के परिमाण को दर्शाता है, यह राशि कई देशों के वार्षिक शिक्षा या स्वास्थ्य बजट से भी अधिक है।

शक्तिशाली का बहाना और दुर्बल की सजा

एक प्रसिद्ध कथा है। एक दिन एक शेर ने नदी के किनारे पानी पी रहे एक खरगोश को पकड़ लिया। शेर ने क्रोध से कहा- "तुमने नदी के ऊपर की ओर पानी पिया, तुम्हारा जूठा पानी नीचे आया और वही मुझे पीना पड़ा। इसलिए मैं तुम्हें मारूँगा।"

खरगोश ने बड़ी विनम्रता से उत्तर दिया- "महाराज, मैंने तो आज पानी पिया ही नहीं, फिर मैं दोषी कैसे हुआ?"

शेर बोला- "यदि तुमने नहीं पिया, तो तुम्हारे पिता ने पिया होगा। अपराध किसी का भी हो, दण्ड तो तुम्हें ही मिलेगा।" और यह कहकर उसने खरगोश को खा लिया।

यह कथा केवल जंगल की नहीं है; अक्सर विश्व राजनीति में भी यही स्थिति दिखाई देती है। शक्तिशाली राष्ट्र अपने स्वार्थों को पूरा करने के लिए कभी-कभी ऐसे ही बहाने खोज लेते हैं, जैसे उस शेर ने खोजे थे।

आज अमेरिका और ईरान के बीच जो तनाव दिखाई देता है, उसमें भी कई विश्लेषकों को इसी प्रकार की मानसिकता दिखाई देती है। मध्य-पूर्व के देशों में तेल के विशाल भंडार हैं, और यह तेल विश्व अर्थव्यवस्था की जीवनरेखा है। इसलिए इस क्षेत्र पर प्रभाव और नियंत्रण की इच्छा विश्व की बड़ी शक्तियों के लिए हमेशा आकर्षण का विषय रही है। हाल के वर्षों में वेनेजुएला और ईरान जैसे तेल-सम्पन्न देशों को लेकर भी अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में तीव्र खींचतान देखी गई है।

ईरान से जुड़ा तनाव केवल दो देशों तक सीमित नहीं रहा। यदि इस क्षेत्र में युद्ध या टकराव बढ़ता है तो उसका प्रभाव पूरे विश्व पर पड़ता है। उदाहरण के लिए, फारस की खाड़ी का होर्मुज जलडमरूमध्य विश्व के तेल परिवहन का एक प्रमुख मार्ग है, जिससे होकर लगभग २० प्रतिशत वैश्विक तेल व्यापार गुजरता है। यहाँ किसी भी प्रकार का संघर्ष तुरन्त वैश्विक ऊर्जा संकट और कीमतों में भारी वृद्धि का कारण बन सकता है।

इसी कारण युद्ध की आग कभी केवल एक क्षेत्र तक सीमित नहीं रहती। उसका प्रभाव विश्व की अर्थव्यवस्था, व्यापार और सामान्य जनजीवन तक फैल जाता है। इसलिए अन्तर्राष्ट्रीय विवादों का समाधान शक्ति-प्रदर्शन से नहीं, बल्कि संवाद और न्यायपूर्ण नीति से होना चाहिए।

वास्तव में, किसी भी संघर्ष का औचित्य तभी है जब वह न्याय और शान्ति की रक्षा के लिए हो; परन्तु यदि उसके पीछे केवल स्वार्थ और नियंत्रण की लालसा हो, तो उसका दुष्परिणाम अन्ततः पूरे विश्व को भुगतना पड़ता है।

वैदिक दृष्टि

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सत्य को स्वीकार करने और असत्य का निर्भीक प्रतिकार करने का सन्देश दिया। वैदिक दृष्टि में युद्ध अन्तिम उपाय है, वह भी केवल अन्याय-निवारण के लिए न कि विस्तार या अहंकार की तुष्टि के लिए। **'कृन्वतो विश्वमार्यम्'** का अर्थ विजय नहीं, बल्कि श्रेष्ठता द्वारा विश्व को उन्नत करना है।

वस्तुतः विचार किया जाय तो युद्ध की जड़ें सीमाओं पर नहीं, मनुष्य के मन में हैं। जब स्वार्थ को राष्ट्रहित का नाम दिया जाता है, जब अहंकार को सम्मान की रक्षा कहा जाता है, जब लालच को विकास कहा जाता है तब सत्य धुंधला हो जाता है। यदि स्थायी शान्ति चाहिए तो शस्त्रों की नहीं, चरित्र की शुद्धि आवश्यक है। सभ्यता का वास्तविक विकास आन्तरिक समृद्धि से होता है, न कि बाहरी विस्तार से।

इतिहास बताता है- जो राष्ट्र विस्तार से बढ़े, वे अन्ततः संघर्ष में उलझे। जो राष्ट्र ज्ञान और संस्कृति से बढ़े, वे युगों तक सम्मानित रहे।

- अशोक आर्य
सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, उदयपुर
चलभाष- ०९३१४२३५१०१, ०८००५८०८४८५

अदृश्य भी दीखता है (त्वामेव प्रत्यक्षं, ब्रह्म वदिष्यामि)

हमने देखा कि मनुष्य तथा संसार- ये दोनों दृश्य हैं, इसलिए इन दोनों के पीछे कोई अदृश्य सत्ता अवश्य होनी चाहिए। अदृश्य से ही दृश्य का प्रवाह होता है; अदृश्य न हो तो दृश्य नहीं हो सकता, अदृश्य ही पर दृश्य निर्भर करता रहता है। कहने को तो दृश्य सत्य है, परन्तु यथार्थ सत्ता अदृश्य की है, दीखने को वृक्ष सत्य है परन्तु यथार्थ सत्ता बीज की है, उस बीज की, जिसमें वृक्ष अदृश्य है।

व्यक्ति में शरीर दीखता है, प्रकृति में संसार दीखता है, व्यक्ति के पीछे एक अवैयक्तिक, अदृश्य सत्ता है, संसार के पीछे एक असंसारी सत्ता, अदृश्य सत्ता है। सत्य तो दोनों हैं, परन्तु अवैयक्तिक तथा असांसारिक सत्ता अपेक्षाकृत अधिक सत्य है क्योंकि अदृश्य सत्ताओं पर ही दृश्य सत्ताएँ आधृत हैं, फिर भी हम शरीर तथा संसार से चिपटे रहते हैं, इनमें रमे रहते हैं।

अदृश्य सत्ता के अन्तिम सत्य होने पर भी हम उधर ध्यान क्यों नहीं देते, इसका कारण यह है कि वह सत्ता सर्वव्यापी होने के कारण हमें सदा प्राप्त है। जो वस्तु सदा प्राप्त होती है उसे प्राप्त करने का प्रयत्न नहीं किया जाता। वह हमारे इतने सान्निध्य में है कि हम उधर सोचते ही नहीं। दूर हो तो मानें; जो हमारे सदा साथ है उसे कौन सोचे? वह सत्ता साथ होती हुई भी अदृश्य है, इसलिए भी उसकी तरफ ध्यान नहीं जाता; जो दृश्य है उसे ही सोचा करते हैं, उसी में रमे रहते हैं। मनुष्य अपनी अदृश्य-सत्ता को जो सदा उसके साथ है सदा भुलाये रहता है, अपनी दृश्य सत्ता, जो अपेक्षाकृत असत्य है, उसी से चिपटा रहता है। प्रकृति में भी प्राण-प्रतिष्ठा करनेवाली अदृश्य चेतन सत्ता को वह भूल जाता है, प्राकृतिक दृश्य-पदार्थों के पाने में ही जीवन का लक्ष्य बना बैठता है। मनुष्य की क्या विडम्बना है कि जो सत्य है उसके अदृश्य होने के कारण उसे भुला बैठा है, जो सत्यसम है उसे दृश्य होने के कारण सत्य समझकर उसमें लीन हो रहा है।

वेदान्ती तो व्यक्ति की अदृश्य सत्ता को (आत्मा या ब्रह्म) सत्य तथा दृश्य-सत्ता (प्रकृति) को असत्य मानते हैं, भ्रम मानते हैं। इसी प्रकार सृष्टि की अदृश्य सत्ता (ब्रह्म या आत्मतत्त्व) को सत्य तथा दृश्य-सत्ता को- अर्थात् प्रकृति को-जो दीख रही है- असत्य मानते हैं। उनके कथनानुसार सृष्टि असत्य है, भ्रम है, ठीक इस तरह जैसे अन्धेरे में पड़ी हुई रस्सी भ्रम के कारण सर्प प्रतीत होती है। उनके कथनानुसार आँखों से दीखनेवाला संसार; रज्जु में सर्प की भ्रान्ति की तरह असत्य है; संसार का जहाँ स्रोत है वह ब्रह्म या आत्म-तत्त्व ही सत्य है। वे तो यहाँ तक पहुँच गये हैं कि सृष्टि को मानते ही नहीं, प्रकृति को ही ब्रह्म या ब्रह्म ही प्रकृति मानते हैं। यह सबकुछ अत्युक्ति है। असली स्थिति यह है कि अदृश्य-सत्ता वास्तविक है, यथार्थ है, सत्य है क्योंकि उसी के आधार पर दृश्य-सत्ता टिकी हुई है, परन्तु दृश्य-सत्ता में हमें उस सत्यता की, उस यथार्थता की प्रतीति हो रही है जो सत्यता या यथार्थता दृश्य-सत्ता में प्राण-प्रतिष्ठा करनेवाली अदृश्य सत्ता में है। इस दृष्टि से अदृश्य-सत्ता सत्य है, और दृश्य-सत्ता में सत्य की प्रतीति हो रही है। अदृश्य-सत्ता (परमेश्वर

या ब्रह्म) के विषय में हम विचार-चिन्तन नहीं करते। इसके दो कारण हैं। पहला कारण यह है कि उसके विषय में हम निश्चिन्त होते हैं क्योंकि वह सत्ता सर्वव्यापक है, सब जगह मौजूद है, हमारे इतने सान्निध्य में है, इतने समीप में हैं कि उसके विषय में हमें सोचने की जरूरत हीं नहीं पड़ती, वह हमें 'प्राप्त' है, जो वस्तु प्राप्त होती है उसके विषय में हमारा ध्यान ही उधर नहीं जाता, वह तो है। इसलिए सर्वसाधारण का जीवन ऐसे चल रहा है कि उन्हें आत्मा को, परमात्मा को जानने की जरूरत ही नहीं। हाँ, जिस सत्ता को जानने की जरूरत है वह दृश्य है, संसार है, प्रकृति है। मनुष्यमात्र ही उस वस्तु को चाहता है जो सत्य है, ययार्थ है, परन्तु क्योंकि अदृश्य-सत्ता सर्वव्यापक है, जहाँ मैं हूँ वहाँ वह भी है, जहाँ वह हैं वहाँ मैं भी हूँ; इसलिए वह सत्ता तो मिली ही हुई है। जो नहीं मिली हुई वह ऐसी वस्तु है जो हमसे दूर है, दृश्य जो कुछ है वह दूर ही तो है, दूर है तभी तो दीखता है, इसलिए मनुष्य आत्मा को, परमात्मा को पाने के लिए आतुर नहीं है; वह उस सत्ता को पाने के लिए आतुर है जो दृश्य है, दीखती है, जो उससे दूर है, जो उसे प्राप्त नहीं परन्तु जिसे वह प्राप्त करना चाहता है, इसलिए प्राप्त करना चाहता है क्योंकि उसमें उसे उस सत्ता की झाँकी दिखाई देती है जो अदृश्य तो है, परन्तु अदृश्य होती हुई भी सत्य है, यथार्थ है।

अदृश्य सत्ता (परमेश्वर या ब्रह्म) के विषय में हम विचार-चिन्तन नहीं करते। इसका दूसरा कारण यह है कि यद्यपि वह सत्य है, यथार्थ है, तथापि अदृश्य है, बीज-रूप है, कारण-रूप है, आँखों के सामने नहीं है। क्योंकि अदृश्य-सत्ता मनुष्य के हाथ नहीं आती- अदृश्य होने के कारण तथा सर्वव्यापक होने से अत्यन्त समीप होने के कारण- इसलिए दृश्य में अदृश्य की झलक या प्रतीति होने की वजह से मनुष्य दृश्य में, संसार में रमा रहता है। दृश्य में रमे रहने का कारण यही है कि उसमें उसे अदृश्य में होनेवाली सत्यता या यथार्थता की प्रतीति होती है। मनुष्य का वास्तविक ध्येय सत्य को, यथार्थ को पाना है। जब सत्य या यथार्थ सत्ता अदृश्य होने अथवा सर्वव्यापक या निकटतम होने के कारण हाथ नहीं लगती, तब मानव के लिए इसके बगैर चारा ही क्या रह जाता है कि वह अदृश्य-सत्ता को पाने के लिए दृश्य-सत्ता को हाथ लगाये, उस दृश्य-सत्ता को जिसमें अदृश्य-सत्ता की झलक या प्रतीति होती है।

रस्सी को पकड़कर मनुष्य ऊपर पहुँचता है, दृश्य को पकड़ वह अदृश्य तक जा पहुँचता है परन्तु यथार्थ सत्ता तो अदृश्य ही है, दृश्य नहीं। यदि अदृश्य न हो तो दृश्य रह नहीं सकता, परन्तु मनुष्य उलझा दृश्य में ही रहता है, संसार में ही, संसार के विषय-भोग में ही रमा रहता है क्योंकि आँखों के सामने तो यह स्थूल संसार ही है। संसार जैसा दीखता है वैसा वह नहीं है।

जैसा दीखता है वैसा वह हमारी इन्द्रियों की रचना के कारण है। आँख का लैंस जैसा देखता है संसार वैसा दीखता है। लैंस बदल जाय, तो संसार बदल जायगा। हर व्यक्ति का आँख का लैंस उन्नतोदर हो, तो हर वस्तु हर व्यक्ति को मोटी दिखाई देने लगेगी, लैंस अवनतोदर हो तो सभी को हर वस्तु पतली दिखाई देगी। हाथी को हम कितने दिखाई देते हैं, कीड़ी को कितने दिखाई देते हैं, यह तो हाथी या कीड़ी बनने पर पता चलेगा, परन्तु इसमें सन्देह नहीं, हर वस्तु का हमारा ज्ञान हमारे आँख के लैंस की बनावट पर निर्भर है, यथार्थ में वह कितनी है, कैसी है- यह हम नहीं कह सकते। हम अपनी इन्द्रियों के कारण इस तरह के बने हुए हैं कि संसार और उसके विषयों को ही यथार्थ समझते हैं। मेरा धन, मेरा मकान, मेरा पति, मेरी पत्नी, मेरे सम्बन्धी, मेरा समाज, मेरा देश- यह सब ज्ञान अयथार्थ है, असत्य है, बनाया हुआ है, कल्पित किया हुआ है; जब समय आता है तब यह सब-कुछ टूट जाता है, छिन्न-भिन्न हो जाता है, असलियत यह है कि मैं और वह ये दोनों भिन्न-भिन्न सत्ताएँ हैं, इनका

आपस का सम्बन्ध बनाया हुआ है, कल्पित किया हुआ है।

इतना ही नहीं कि यह सम्बन्ध कल्पित है, मेरे दृश्य रूप का और उसके भीतर रहनेवाले अदृश्य आत्मा का सम्बन्ध भी कल्पित है। मैं अपने को शरीर समझे बैठा हूँ। यथार्थ सत्य यह है कि मैं जो स्थूल रूप में दीखनेवाला शरीर है, और उसके भीतर जो विद्यमान अदृश्य अशरीर है- इन दोनों की पृथक्-पृथक् सत्ता है।

उस अदृश्य-सत्ता से, जिसे आध्यात्मिक शब्दावली में 'आत्मा' कहते हैं, इस दृश्य शरीर का निर्माण होता है। यह दृश्य शरीर उस अदृश्य, अशरीर सत्ता के सहारे टिका हुआ है। अदृश्य कूच कर जाये तो दृश्य समाप्त हो जाता है। यही सिद्धान्त दृश्य-सृष्टि पर लागू है। यथार्थ-सत्ता इस दृश्य सृष्टि की नहीं, यथार्थ-सत्ता उस अदृश्य शक्ति की है जिसके सहारे यह दृश्य सृष्टि टिकी हुई हैं। सत्य वह है जो नहीं दीखता, असत्य वह है जो दीखता है। सृष्टि में जो बदलता रहता है, परिवर्तनशील है वह उस पर टिका हुआ है जो बदलता नहीं, परिवर्तित नहीं होता, सदा एक रहता है, स्थिर ही सत्य है, अस्थिर असत्य है, कम से कम अस्थिर स्थिर के ऊपर आश्रित है जैसे स्थिर किल्ली पर घूमनेवाली चक्की और स्थिर धुरे पर घूमनेवाला पहिया आश्रित है। जीवन का लक्ष्य सत्य को जानना है। हमारा जीवन असत्य में बीत रहा है। हम चारों तरफ से असत्य से घिरे हुए हैं। सत्य क्योंकि सर्वव्यापक है, सब जगह है इसलिए निकटतम होने तथा अदृश्य होने के कारण हम उसे देख नहीं पाते। सत्य सब जगह मौजूद होने के कारण हमें प्राप्त है; जो वस्तु 'प्राप्त' होती है उधर हमारा ध्यान नहीं जाता। हम परिवर्तनशील वस्तु को ही जो हमें अप्राप्त है, जो अस्थिर है, जो असत्य है, जिसे हम देख सकते हैं, और देख सकने के कारण ही जिसे हम सत्य समझते हैं, यद्यपि वह सत्य नहीं होती परन्तु जिसमें सत्य की प्रतीति होती है उसी में सम्पूर्ण जीवन बिता देते हैं। हमारे जीवन की यात्रा उस वस्तु को पाने के लिए नहीं है जिसमें सत्य तो न हो, केवल सत्य की प्रतीति हो; हम तो यथार्थ को, सत्य को पाना चाहते हैं। प्रश्न यह है कि इसका क्या उपाय है? इस समस्या का क्या हल है?

हमने प्रारम्भ में कहा था कि संसार के पदार्थों को दो भागों में बाँटा जा सकता है- दृश्य तथा अदृश्य।

अदृश्य यद्यपि दीखता नहीं है, परन्तु यथार्थ सत्ता उसी की है; दृश्य हमें दीखता है परन्तु उसकी सत्ता अपने-आप में कुछ नहीं है। अदृश्य न हो तो दृश्य रहता ही नहीं। मकान में रहनेवाला न रहे तो मकान बेकार, आत्मा न रहे तो शरीर बेकार, भोक्ता न रहे तो भोग्य-पदार्थ बेकार। इस तथ्य को समझ लेना ही उस प्रश्न का हल है, उस समस्या का समाधान है, जिस प्रश्न या जिस समस्या का हमने अभी उल्लेख किया है। हम अभी तक 'प्रतीति' को 'प्राप्त' माने बैठे हैं, 'असत्य' को 'सत्य', 'अस्थिर' को 'स्थिर', 'परिवर्तनशील' को 'अपरिवर्तनीय', 'क्षण-भंगुर' को 'सनातन' समझे हुए हैं। हम 'प्रतीति' के प्रति जागे हुए हैं, 'प्राप्त' के प्रति सोये हुए हैं; 'असत्य' के प्रति जागे हुए हैं, 'सत्य' के प्रति सोये हुए हैं; 'अस्थिर' के प्रति जागे हुए हैं, 'स्थिर' के प्रति सोये हुए हैं; 'परिवर्तनशील' के प्रति जागे हुए हैं, 'अपरिवर्तनीय' के प्रति सोये हुए हैं। इसी को गीता में कहा है-

या निशा सर्वभूतानां तस्यां जाति संयमी।
यस्यां जाग्रति भूतानि सा निशा पश्यतो मुनेः।।

- श्रीमद् भागवत् गीता १/५५

जिस क्षेत्र में सर्व-साधारण लोग सोये रहते हैं, उसमें संयमी लोग जागे रहते हैं; जिस क्षेत्र में सर्व-साधारण लोग जागे रहते हैं उसमें संयमी सोये रहते हैं। हम सब भौतिक जगत् के प्रति सजग है, आध्यात्मिक जगत् के प्रति प्रसुप्त हैं। हमारी इस दीर्घ-निद्रा को देखकर ही स्वामी विवेकानन्द ने हमें ललकारा था-

उत्तिष्ठत, जाग्रत, प्राप्य वरान् निबोधत।

- कठोपनिषद् १/३/१४

हमारी समस्या का हल तभी हो सकता है जब हम 'प्राप्त' को प्राप्त और 'प्रतीति' को प्रतीति समझें, 'असत्य' को असत्य और 'सत्य' को सत्य समझें। यह भी तब हो सकता है जब हम 'सत्य' और 'असत्य' एवं 'प्राप्त' तथा 'प्रतीति' के भेद पर विचार करें और

उनके भेद को समझें। इन दोनों के भेद को समझने के लिए विचार तथा ध्यान के भेद को समझना आवश्यक है। हमें यह जान लेना चाहिए कि 'विचार' तथा 'ध्यान' ये दो अलग-अलग मानसिक प्रक्रियाएँ हैं। प्रायः 'विचार' तथा 'ध्यान' को एक ही वस्तु समझा जाता है, परन्तु ऐसा नहीं है। 'विचार' सविषय मानसिक प्रक्रिया है, इसमें ऊहापोह चलता है, मन के सामने भिन्न-भिन्न पथ आते हैं, किसी को यह ठीक समझता है, किसी को गलत। 'ध्यान' में ऐसा नहीं होता। 'ध्यान' के विषय में योगदर्शन का कहना है-

ध्यानं निर्विषयं मनः।।

ध्यान मन की वह अवस्था है जब सब विचार शान्त हो जाते हैं, मन निर्विषय हो जाता है। भरे हुए तालाब में जैसे चारों तरफ से झझावात के थपेड़ों से लहरें उठती और बैठती हैं ऐसी मानसिक अवस्था 'विचारों' की अवस्था है; जब लहरें उठना-बैठना छोड़कर समतल आ जाती हैं तब मन की जो अवस्था होती है उसे 'ध्यान' की अवस्था कहा जाता है।

'ध्यान' की अवस्था का क्या रूप है? यह तो हम बार-बार कह आये हैं कि मनुष्य में दो सत्ताएँ हैं- दृश्य तथा अदृश्य। शरीर दृश्य है, मन द्वारा शरीर में जो विक्षेप उत्पन्न हो जाते हैं उन्हें भी दृश्य-कोटि में रखा जा सकता है। जब हमारे भीतर का अदृश्य हमसे अलग होकर, हमारे दृश्य रूप को देखता है, तब हम जिस अवस्था में पहुँच जाते हैं उसे 'ध्यान' कहते हैं। अपने को अपने से अलग होकर देखने लगना 'ध्यान' कहलाता है। इसके लिए जे. कृष्णमूर्ति ने अंग्रेजी के जिस शब्द का प्रयोग किया है वह है- Awareness-अवेयरनैस-स्वात्म-प्रत्यक्ष- अपने को देख लेना, अपना साक्षात्कार करना। हम अपने को नहीं देखते, हम बहाव में बहे रहते हैं। हमें यह ख्याल ही नहीं होता कि हम बहाव में से निकलकर अपने को काम-क्रोध-लोभ-मोह की नदी में बहता हुआ देख सकते हैं। अपने को देख सकना ही सबसे बड़ी कला है, सबसे बड़ा योग है।

प्रश्न यह है कि क्या हम अपने को अपने से अलग होकर देख सकते हैं या नहीं? हाँ, यह समस्या है, इसी को योग दर्शन ने **'तदा द्रष्टुः स्वरूपे अवस्थानम्'** कहा है- 'ध्यान' उस अवस्था का नाम है जब व्यक्ति निर्विषय होकर अपने स्वरूप में स्थित हो जाता है, अपने-आप में आ जाता है। कल्पना कीजिए कि आप क्रोध में हैं। आँखें लाल-लाल हो गयी हैं, गालियाँ बक रहे हैं: मुँह से झाग निकल रहा है- यह आपकी क्रोध की दशा है। अपनी इस क्रोधपूर्ण दशा को क्रोध से अलग होकर आप देख नहीं सकते? मनुष्य के उद्वेग काम, क्रोध आदि- जब उसे घेर लेते हैं तब वह अन्धा हो जाता है। क्रोध में यह काँप रहा है, हाथ-पैर पटक रहा है। आप कहते हैं- तुम क्रोध में हो। वह कहता है- नहीं, मैं क्रोध में नहीं हूँ। उस समय वह क्रोधावेश में है, इसलिए वह उद्वेग के कारण अपने को देख नहीं पा रहा, अंधा हो रहा है। परन्तु क्या वह अपने क्रोधीपन को देख ही नहीं सकता? ज्योंही उसे दीखने लगे कि वह क्रोध में था, क्रोध रफूचक्कर हो जाता है। क्रोध रफूचक्कर इसलिए हो जाता है क्योंकि वह अपने से अलग होकर अपने को देखने लगता है। इस प्रकार अपने को अपने से अलग होकर देखने लगना ही 'ध्यान' कहलाता है।

'ध्यान' कोई अलग से योग की प्रक्रिया नहीं है। यह स्वाभाविक मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया है। इसे किसी गुरु से जानने की जरूरत नहीं। हर कोई इसे जानता है। जब क्रोध के बाद मनुष्य कहता है कि मुझे क्या हो गया, मैं अपने को भूल ही गया, इस छोटी-सी बात पर मुझे आपे से बाहर नहीं होना चाहिए था- यह सब ध्यान के कारण ही होता है। भेद यह है कि यह सब-कुछ हम क्रोध शान्त होने के बाद कहते हैं। अगर क्रोध की दशा में ही यह सब-कुछ कहने लगें, तो क्रोध उसी समय शान्त हो जाये, ठीक ऐसे जैसे दूध में उबाल आते ही उस पर पानी का छींटा देते ही उबाल बैठ जाता है।

अपने से अपने को अलग करके देखना- यह जीवन की एक कला है। जैसे हम संसार के पदार्थों को देखते हैं, ऐसे ही अपने को अपने से अलग कर देखने का अभ्यास करना चाहिए।

जब मनुष्य काम-क्रोध-लोभ-मोह आदि किसी मनो-विकार में हो, तब वह अपने रूप से अलग खड़ा होकर अपने को देखने लगे, तो क्रोध रहता ही नहीं, लोभ रहता ही नहीं, मोह रहता ही नहीं। इसी को आध्यात्मिक शब्दावली में रूपान्तरण या अंग्रेजी में Transformation कहते हैं। मनुष्य के रूपान्तरण में देर नहीं लगती, वह झट हो जाता है, आवश्यकता है सिर्फ ध्यान की- अपने को अपने से अलग होकर देखने की।

- डॉ. सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार
साभार- सत्य की खोज

आईएमए राजस्थान की कमान अब उदयपुर के डॉ. आनन्द गुप्ता के हाथ
कड़े मुकाबले में जीते, दो दशक के अनुभव को मिला सम्मान

उदयपुर। चिकित्सा जगत् के लिए गर्व का क्षण है कि इण्डियन मेडिकल एसोसिएशन (आईएमए) उदयपुर के अध्यक्ष डॉ. आनन्द गुप्ता को वर्ष २०२७-२८ के लिए राजस्थान, आईएमए का अध्यक्ष निर्वाचित किया गया है। कड़े और प्रतिस्पर्धात्मक चुनाव में उन्होंने रिकॉर्ड मतों से जीत दर्ज कर इतिहास रच दिया।

डॉ. गुप्ता पिछले दो दशकों से चिकित्सा क्षेत्र में सक्रिय रहते हुए दक्षिण राजस्थान में स्वास्थ्य सेवाओं को नई दिशा देने में अहम भूमिका निभा चुके हैं। उनके नेतृत्व और नवाचार पूर्ण सोच का ही परिणाम है कि अब उन्हें पूरे राज्य की जिम्मेदारी सौंपी गई है। वे वर्तमान में आईएमए उदयपुर के अध्यक्ष हैं और संगठन में सचिव, जोनल सचिव, सेंट्रल कमेटी सदस्य सहित कई महत्वपूर्ण पदों पर अपनी सेवाएँ दे चुके हैं। साथ ही आईएमए मेडिकल स्टूडेंट्स नेटवर्क के चेयरमैन एवं कोऑर्डिनेटर के रूप में भी उन्होंने उल्लेखनीय कार्य किया है। डॉ. गुप्ता को उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए कई बार राष्ट्रीय स्तर पर सम्मानित किया जा चुका है। वर्ष २०२४ में सर्वश्रेष्ठ शाखा, २०२३ और २०२१ में सर्वश्रेष्ठ स्थानीय अध्यक्ष तथा २०१२ में सर्वश्रेष्ठ सचिव के राष्ट्रीय अवॉर्ड से नवाजा जा चुका है। उनकी इस जीत से चिकित्सा समुदाय में खुशी की लहर है। राज्यभर के चिकित्सकों ने उन्हें बधाई देते हुए उनके नेतृत्व में संगठन के और अधिक मजबूत होने तथा स्वास्थ्य सेवाओं में नवाचार की उम्मीद जताई है।

सत्यार्थ सौरभ की रजिस्टर्ड पोस्टल सेवा

सत्यार्थ सौरभ के सम्मानित सदस्यगण! हमें पता है कि आप लोगों में से अनेकों को सत्यार्थ सौरभ पत्रिका या तो समय से नहीं मिलती है या फिर मिलती ही नहीं है। इसलिए न्यास ने एक निर्णय लिया है कि अगर आप एक वर्ष में रुपये 542/- (Postage हेतु) देते हैं तो आपको पत्रिका रजिस्टर्ड भेजी जाएगी। ताकि फिर भी पत्रिका प्राप्त नहीं होती है तो आप पोस्ट ऑफिस में शिकायत दर्ज करवा सकते हैं जिससे ये समस्या सुलझ सकती है।

दान की अपील

सत्यार्थ प्रकाश रचना स्थली नवलखा महल से NMCC के रूप में सत्यार्थ शिक्षाओं को जिस अद्भुत प्रकार से प्रसारित किया जा रहा है और सहस्रों लोग आकर्षित हो इसका लाभ ले रहे हैं जिस कारण से यह स्थल अब विख्यात होता जा रहा है। आपसे प्रार्थना है कि इस यज्ञ में अपनी छोटी–बड़ी आहुति अवश्य देने की कृपा करें। इस हेतु साथ में दिए यूपीआई कोड का भी आप इस्तेमाल कर सकते हैं। बस एक अनुरोध है कि अगर आप अर्थ सहयोग प्रदान करें तो चलभाष 9314235101, 7976271159 अथवा 9314535379 पर सूचित अवश्य करें।

आजीवन सत्यार्थ मित्र

सत्यार्थमित्र योजना में प्रतिवर्ष 5100 रुपए देने के क्रम में कुछ बन्धु प्रतिवर्ष रिन्यूअल कराने के झंझट से विरत रहना चाहते हैं, अतः न्यास ने अपनी पिछली बैठक में यह निश्चय किया है कि आजीवन सत्यार्थमित्र के रूप में जो भाई बहिन रु. 51000 एकमुश्त जमा करा दें तो उनका यह सहयोग आजीवन सत्यार्थमित्र के रूप में मान्य होगा। समर्थ आर्यजन इस दिशा में सकारात्मक सहयोग करने का श्रम करें।

–नवसम्वत्सर चैत्र शुक्ल प्रतिपदा 19 मार्च पर केन्द्रित कुछ विचार–

मनमोहन कुमार आर्य

सृष्टि व विक्रमी नवसंवत्सर चैत्र–शुक्ल–प्रतिपदा गौरवपूर्ण दिवस

आगामी नव सृष्टि संवत् एवं विक्रमी संवत् चैत्र शुक्ल प्रतिपदा तदनुसार १९ मार्च, २०८३ को आरम्भ हो रहा है। हमारे पास काल की अवधि की जो गणनायें हैं वह दिन, सप्ताह, माह व वर्ष में होती हैं। यदि सृष्टि की उत्पत्ति, मानवोत्पत्ति अथवा वेदोत्पत्ति का काल जानना हो तो वह वर्षों में बताया जाता है। वैदिक गणनाओं में वर्ष की अवधि सामान्यतः ३६० दिन मानी जाती है। लगभग इतनी अवधि पूरी होने पर वर्ष वा संवत्सर बदलते हैं। वर्तमान सृष्टि संवत्सर १,९६,०८,५३,१२७ आरम्भ होना है यह दिन विक्रमी संवत् २०८३ का प्रथम दिवस होगा। अंग्रेजी वर्ष आरम्भ होने पर इसको मानने वाले नव वर्षारम्भ के दिन उत्सव के रूप में मनाते हैं वह परस्पर शुभकामनाओं का आदान-प्रदान करते हैं। उन्हीं के अनुकरण से हमारे कुछ वैदिक व सनातन धर्म के बन्धु इसी प्रकार से एक दूसरे को शुभकामनाएँ एवं बधाई देने लगे हैं। इस नवसंवत्सर दिन का महत्व यही है कि इतने वर्ष पूर्व सृष्टि, वेद व मानव का आरम्भ हुआ था तथा २०८२ वर्ष पूर्व महान् पराक्रमी आर्य वा हिन्दू राजा विक्रमादित्य शकों को युद्ध में पराजित कर राज्यारूढ़ हुए थे। महाराज विक्रमादित्य जी की राजधानी उज्जैन मानी जाती है। विक्रमादित्य एक आदर्श राजा थे। उन्हें हम कुछ-कुछ राजा राम के अनुगामी की तरह मान सकते हैं। उनकी स्मृति बनाये रखने के लिए तत्कालीन विद्वानों ने इस संवत्सर को आरम्भ किया था।

हम जिस संसार में रहते हैं वह व समस्त ब्रह्माण्ड ईश्वर से निर्मित व संचालित है। वेदों में ईश्वर, जीवात्मा, प्रकृति सहित मनुष्यों के कर्तव्य अकर्तव्यों का विस्तृत वा पूर्ण ज्ञान है। हमारी यह सृष्टि बिना कर्त्ता व उपादान कारण के अस्तित्व में नहीं आई है अपितु सच्चिदानन्दस्वरूप, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापक, निराकार, सर्वान्तर्यामी, अनादि, नित्य, अनुत्पन्न, अजर, अमर, अविनाशी और अनन्त आनन्दस्वरूप ईश्वर ही इस सृष्टि का रचयिता है। अतः सृष्टि बनाने का कार्य ईश्वर ने किसी समय विशेष पर आरम्भ किया होगा और किसी विशेष समय पर इस सृष्टि का निर्माण सम्पन्न हुआ होगा। यह भी निश्चित है कि ब्रह्माण्ड वा हमारे सौर्य मण्डल के बन जाने वा इसमें जल, वायु, अग्नि व अन्य सभी आवश्यक पदार्थों की उपलब्धि होने तथा जिस स्थान विशेष (अनेक प्रमाणों से यह स्थान तिब्बत था) पर मानव सृष्टि अस्तित्व में आई, वह भी इस सृष्टि का कोई दिन विशेष रहा होगा। यदि उपलब्ध जानकारी के आधार पर कहें तो उस दिन चैत्र शुक्ल प्रतिपदा का दिन था, यह अनुमान होता है। मनुष्यों की उत्पत्ति के साथ ही ईश्वर को सृष्टि की आदि में

उत्पन्न युवावस्था के स्त्री-पुरुषों को जीवन के सामान्य व विशेष व्यवहार करने के लिए भाषा व व्यवहार ज्ञान की भी उपलब्धि वा पूर्ति करनी थी अन्यथा उनका सामान्य जीवन प्रवाह सम्भव न होता। अतः ईश्वर ने इसी दिन, चैत्र माह के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा को, चार ऋषियों, अग्नि, वायु, आदित्य व अंगिरा को, वेदों का ज्ञान देने के साथ इतर मनुष्यों को परस्पर व्यवहार करने के लिए भाषा का ज्ञान भी दिया था, ऐसा अनुमान होता है। बहुत से विद्वान् इस अनुमान व मान्यता से मतभेद रख सकते हैं। ऐसे विद्वान् महानुभावों से हमारा निवेदन है कि वह अपनी मान्यताओं को युक्ति व प्रमाण सहित प्रस्तुत करें जिससे हमारा व अन्य आर्य बन्धुओं का मार्गदर्शन व समाधान हो सके।

आर्यपर्व पद्धति के लेखक पं. भवानीप्रसाद जी का कथन है कि यह इतिहास बन गया कि सृष्टि का आरम्भ चैत्र के प्रथम दिन अर्थात् प्रतिपदा को हुआ था, क्योंकि सृष्टि का प्रथम मास वैदिक संज्ञानुसार मधु कहलाता था और वही फिर ज्योतिष में चान्द्र काल गणनानुसार चैत्र कहलाने लगा था। इसी की पुष्टि में ज्योतिष के हिमाद्रि ग्रन्थ में यह श्लोक आया है-

चैत्रे मासि जगद् ब्रह्मा ससर्ज प्रथमेऽहनि।
शुक्लपक्षे समग्रन्तु, तदा सूर्योदये सति।।

अर्थात् चैत्र शुक्ल पक्ष के प्रथम दिन सूर्योदय के समय ब्रह्मा ने जगत् की रचना की। यह भी बता दें कि औरंगजेब के समय में भी भारत में नवसम्वत्सर का पर्व मनाने की प्रथा थी। इसका उल्लेख औरंगजेब ने अपने पुत्र मोहम्मद मोअज्जम को लिखे पत्र में किया है जिसमें वह कहता है कि काफिर हिन्दूओं का यह पर्व है। यह दिन राजा विक्रमादित्य के राज्याभिषेक की तिथि भी है।

भारतीय नवसंवत्सर दिवस की यह विशेषता है कि यह ऐसी ऋतु में आरम्भ होता है कि जब न अधिक शीत होता है, न उष्णता और न ही वर्षा ऋतु। चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के दिन वातावरण बहुत सुहावना व मनोरम होता है। खाद्यान्न गेहूँ की फसल लगभग तैयार हो जाती है। सभी हरी-भरी वृक्ष व वनस्पतियाँ आँखों को आह्लादित करती हैं। सर्वत्र नये-नये पुष्प अपनी सुन्दरता से एक नये काव्य की रचना करते प्रतीत होते हैं। यह समस्त वातावरण व प्राकृतिक सौन्दर्य अपने आप में एक उत्सव-सा ही प्रतीत होता है। यही ऋतु मानवोत्पत्ति के लिए उपयुक्त प्रतीत होती है। यदि अन्य ऋतुओं में मानवोत्पत्ति होती तो हमारे आदि स्त्री व पुरुषों को असुविधा व कठिनाई हो सकती थी। ईश्वर के सभी काम निर्दोष होते हैं। अतः यह उसी का प्रमाण है कि मानव सृष्टि उत्पत्ति ईश्वर ने एक सुन्दर व सुरम्य स्थान तिब्बत जहाँ पर्वत व वन हैं तथा जल सुलभ है, की थी। हमें यह अनुभव होता है कि इस दिन हमें अपने आदि पूर्वजों को स्मरण कर स्वयं को उन जैसा ज्ञानी व स्वस्थ व्यक्ति बनाने का संकल्प लेना चाहिये व इसके लिए समुचित प्रयास करने चाहिए। यदि विश्व के सभी लोग अपने पूर्वाग्रहों को छोड़कर व परस्पर मिलकर उस आदिकालीन स्थिति पर विचार करें तो अविद्या व अज्ञान पर आधारित तथा मनुष्यों के दुःख के प्रमुख कारण मत-मतान्तरों से मनुष्यों को अवकाश मिल सकता है और संसार में एक ज्ञान व विवेक से पूर्ण वैदिक मत स्थापित हो सकता है जिससे संसार में सुख, शान्ति व कल्याण का वातावरण बन सकता है।

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को नवसंवत्सर के दिन ही मर्यादा पुरुषोत्तम राजा रामचन्द्र जी के अयोध्या आकर सिंहासनारुढ़ होने की मान्यता भी प्रचलित है। विद्वान्

मानते हैं कि इसी दिन महाभारत युद्ध के समाप्त होने पर राजा युधिष्ठिर जी का राज्याभिषेक हुआ था। आदर्श महापुरुष व वैदिक संस्कृति के अनुरागी रामचन्द्र जी का जन्म दिवस रामनवमी का महापर्व पर्व भी इस दिवस के ठीक नवें दिन नवमी को होता है। आर्यसमाज की स्थापना भी चैत्र शुक्ल पंचमी को

हुई थी। यह भी भारत के इतिहास में एक युगान्तरकारी कार्य था जिससे समस्त विश्व के मानवों को ईश्वर व जीवात्मा से सम्बन्धित सत्य व यथार्थ ज्ञान व ईश्वरोपासना की सत्य व प्रमाणिक विधि ऋषि दयानन्द सरस्वती जी के द्वारा प्राप्त हुई थी। अतः न केवल चैत्र शुक्ल प्रतिपदा का दिन अपितु चैत्र माह का पूरा शुक्ल पक्ष ही महत्वपूर्ण है। इस पर्व को देश व विश्व में मनाया जाना चाहिये। यह भी महत्वपूर्ण है कि किसी भी पर्व को मनाते समय जहाँ आनन्द व उल्लास होना चाहिये वहीं ईश्वर-चिन्तन और अग्निहोत्र यज्ञ का भी अनुष्ठान किया जाना चाहिये क्योंकि यह दो कार्य संसार में श्रेष्ठतम् व उत्तम कर्म हैं। इसके अनन्तर अन्य सभी वेदविहित कार्य किये जाने चाहिये। ऐसा करने से ही परिवार, समाज व देश का वातावरण आदर्श व अनुकरणीय बन सकता है। यह भी आवश्यक है कि किसी भी पर्व पर किसी भी व्यक्ति को सामिष भोजन व मद्यपान किंचित भी नहीं करना चाहिए। वेदानुसार यह दोनों कार्य अत्यन्त हेय एवं घृणित हैं, मनुष्यों को इनसे बचना चाहिये और देश व राज्य की सरकारों को इनको दण्डनीय बनाने के साथ इन्हें प्रतिबन्धित करने की योजना भी बनानी चाहिये।

हम संसार में यह भी देखते हैं कि संसार में जितने भी मत, सम्प्रदाय, वैदिक संस्कृति से इतर संस्कृतियाँ व सभ्यतायें हैं, वह सभी विगत ३-४ हजार वर्षों में ही अस्तित्व में आई हैं जबकि सत्य वैदिक धर्म व संस्कृति एवं वैदिक सभ्यता विगत १.९६ अरब वर्षों से संसार में प्रचलित है। वैदिक धर्म ही सभी मनुष्यों का यथार्थ धर्म है। यह बात ज्ञान व विवेक पर आधारित, पूर्ण वैज्ञानिक होने सहित युक्ति एवं तर्क से सिद्ध है। वेद के ईश्वरीय ज्ञान होने के कारण वेदेतर मतों की वैदिक सिद्धान्तों की पोषक मान्यतायें ही स्वीकार्य होती है, विपरीत मान्यतायें नहीं। महर्षि दयानन्द ने इस विषय पर सूक्ष्मता से विचार व विश्लेषण किया और पाया कि वेद और वेदानुकूल मान्यतायें ही ग्राह्य एवं करणीय है तथा वेद विरुद्ध मत व मान्यतायें आचरणीय नहीं हैं। इस सिद्धान्त का पालन सभी मनुष्यों के लिए उत्तम व आवश्यक है। भविष्य में जैसे-जैसे ज्ञान का विकास होता जायेगा तो अवश्य ही संसार के लोग वेद विरुद्ध बातों को मानना छोड़कर सत्य ज्ञान पर आधारित वैदिक मान्यताओं को ही स्वीकार करेंगे। समय परिवर्तनशील है। सत्य हर काल में टिका रहता है और असत्य नष्ट होता जाता है। यही स्थिति अविद्या व अज्ञान पर आधारित व प्रचलित अविद्यायुक्त बातों की भी भविष्य में होगी। हमें सत्य को ग्रहण और असत्य का त्याग करना है, अवद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी है तथा सबसे प्रीतिपूर्वक, धर्मानुसार और यथायोग्य व्यवहार करना है। यही वेद, ऋषि दयानन्द और सत्यार्थप्रकाश का शाश्वत् सन्देश है। सत्य पर ही संसार, मनुष्य समाज व सभी व्यवस्थायें टिकी हुई हैं। **सत्यमेव जयते नानृतं**। सत्य की सदा जय होती है असत्य की नहीं। इसी भावना से ईश्वर-जीवात्मा का चिन्तन करने के साथ अग्निहोत्र-यज्ञ करके नवसम्वत्सर पर्व को मनाना चाहिये।

- १९६, चुक्खूवाला-२, देहरादून (उत्तराखण्ड)

साकार ईश्वर पौराणिकों का भ्रम

(शचींद्र शर्मा के लेख 'आर्यसमाजीयों का काल्पनिक निराकार ईश्वर' के उत्तर में)

{श्री शचीन्द्र शर्मा ने एक लेख 'आर्यसमाजियों का काल्पनिक निराकार ईश्वर' लिखकर प्रकाशित किया। जिसमें मुख्यतः आर्यसमाज की निराकार ईश्वर विषयक मान्यता पर प्रश्न उठाते हुए यह सिद्ध करने का असफल प्रयास किया है कि महर्षि दयानन्द भी मानते थे कि ईश्वर साकार है। उनके इस कुप्रयास का निराकरण डॉ. मधुलिका (भीनमाल, राज.) ने इस लेख में किया है।}

महर्षि दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश (प्रथम संस्करण, प्रथम समुल्लास) में लिखते हैं-

"...'**निर्गतः आकारोयस्मात्स निराकारः**' जिसका आकार कोई नहीं, इससे परमेश्वर का नाम 'निराकार' है।"

महर्षि यहाँ स्पष्ट रूप से यह अभिप्राय ग्रहण कर रहे हैं कि परमेश्वर किसी भी प्रकार के आकार, आकृति, रूप वा सीमा से रहित है। इसके पश्चात् भी यदि यह कहा जाए कि- "इससे परमात्मा साकार सिद्ध हो जाता है, क्योंकि उसमें पहले आकार था, इसीलिए तो निकल गया। यदि उसमें कोई आकार नहीं था, तो निकल क्या गया?" तो यह अर्थ ऋषि के तात्पर्य के अनुरूप नहीं है। आप पूरी तरह से पूर्वाग्रह से ग्रस्त प्रतीत होते हैं। वस्तुतः आपकी पद्धति शब्दों का केवल शब्दकोश पर आधारित अर्थ करने की है। उदाहरणार्थ यदि निम्न वैदिक मन्त्र का ऐसा ही शाब्दिक अनुवाद कर दिया जाए-

चत्वारि शृंगा त्रयो अस्य पादा द्वे शीर्षे सप्त हस्तासो अस्य।
त्रिधा बद्धो वृषभो रोरवीति महोदेवा मर्त्याम् आविवेश।

तो वह कुछ ऐसा होगा- इसके चार सींग, तीन पैर, दो सिर और सात हाथ हैं। तीन टुकड़ों में बंधा बैल चिल्लाया और महान् देवता नश्वर संसार में प्रवेश कर गए।

ऐसे ही अनुवादों से सनातन धर्म का नाश हुआ।

प्रतीत होता है कि आपने सत्यार्थप्रकाश की भूमिका नहीं पढ़ी और सीधे जो अपने काम की बात लगी, वह ले ली। स्वयं महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश की भूमिका में स्पष्ट चेतावनी दी है-

"जो कोई इस ग्रन्थकर्त्ता के तात्पर्य से विरुद्ध मनसा से देखेगा, उसको कुछ भी अभिप्राय विदित न होगा.. बहुत से हठी, दुराग्रही मनुष्य होते हैं कि जो वक्ता के अभिप्राय से विरुद्ध कल्पना किया करते हैं, विशेषकर मत वाले लोग। क्योंकि मत के आग्रह से उनकी बुद्धि अन्धकार में फँस के नष्ट हो जाती है।"

यदि उसी समुल्लास में इससे आगे की दो पंक्ति और पढ़ ली होतीं, तो आप एक ऋषि का उपहास करने का

पाप न करते। वहाँ महर्षि 'निर्गत' शब्द का अर्थ करते हुए 'निरंजन' शब्द की व्युत्पत्ति में लिखते हैं- (अञ्जू व्यक्तिम्लक्षणकान्तिगतिषु) इस धातु से 'अञ्जन' शब्द और 'निं' उपसर्ग के योग से 'निरंजन' शब्द सिद्ध होता है।

'अंजनं व्यक्तिर्लक्षणं कुकाम इन्द्रियैः प्राप्तिश्चेत्यस्माद्यो निर्गतः पृथग्भूतः स निरंजनः' जो व्यक्ति अर्थात् आकृति, म्लेच्छाचार, दुष्टकामना और चक्षुरादि इन्द्रियों के विषयों के पथ से पृथक् है, इससे ईश्वर का नाम 'निरंजन' है।

यहाँ महर्षि ने स्पष्ट रूप से 'निर्गत' का अर्थ 'पृथक्' लिया है, न कि 'पहले था और निकल गया'। 'निं' का अर्थ 'अभाव' भी है, जैसा कि 'निर्मक्षिकम्' आदि प्रयोग में है।

इस प्रकार **'निर्गतः आकारो यस्मात्स निराकारः'** का अर्थ हुआ- जिससे आकार पृथक् है अर्थात् जगत् से पृथक् होने के कारण 'निराकार' कहलाता है।

द्वितीय संस्करण में महर्षि स्वयं इसे और अधिक स्पष्ट कर देते हैं- **'निर्गत आकारात्स निराकारः'** जिसका आकार कोई भी नहीं और न कभी शरीर-धारण करता है, इसलिए परमेश्वर का नाम 'निराकार' है।

यहाँ भी 'निर्गत' का अर्थ 'पृथक्' लें, तो अर्थ इस प्रकार बनेगा- जो आकार से पृथक् है, वह 'निराकार' कहलाता है।

यदि गम् धातु का अर्थ 'ज्ञान' और 'प्राप्ति' लें, तब भी यही भाव है कि परमेश्वर निराकार होने के कारण, आकार (भौतिक पदार्थों) से जाना वा प्राप्त नहीं किया जा सकता।

निराकार = सीमाबद्ध भौतिक रूप का निषेध

जब बुद्धि पर पत्थर पड़ जाते हैं, तो निराकार भी सब जगह साकार ही दिखाई पड़ता है।

आप आगे महर्षि दयानन्द को उद्धृत करते हैं-

''जब वह (परमात्मा) प्रकृति से भी सूक्ष्म और उसमें व्यापक है।'' (सत्यार्थ प्रकाश, समुल्लास ८)

'जीव का स्वरूप सूक्ष्म है और परमेश्वर अतीव सूक्ष्मात् सूक्ष्मतर स्वरूप है।' (सत्यार्थ प्रकाश, समुल्लास ७)

इन दोनों से आप कहना चाहते हैं कि महर्षि जी ने परमात्मा को प्रकृति व आत्मा की अपेक्षा सूक्ष्मतर बताकर उसका सूक्ष्मतम आकार स्वयं सिद्ध कर दिया। अर्थात् आप सूक्ष्म से आकार का ग्रहण कर रहे हैं। यहाँ भी आपने वही भूल कर दी, लेखक का आशय नहीं समझा। जब बुद्धि सूक्ष्म न हो, तो ऋषियों के ग्रन्थों को नहीं पढ़ना चाहिए। यहाँ बुद्धि सूक्ष्म होने का अर्थ यह नहीं है कि बुद्धि का आकार हो गया।

सूक्ष्म का अर्थ है-

* किसी प्रकार से ग्राह्य न होना।
* भौतिक मापन के अधीन न होना।

आपने सूक्ष्मता (subtlety) और आकार (form) को एक मान लिया गया है। यहीं से भ्रम प्रारम्भ होता है। मान लें- परमात्मा का सूक्ष्म आकार है। तब यहाँ प्रश्न उपस्थित होगा कि किसी पदार्थ का आकार है, तो उसकी सीमा होगी। सीमा के बाहर कुछ होगा, सीमा के अन्दर कुछ होगा और सीमा भी किसी से बनी होगी। पदार्थ की सीमा है अर्थात् वह संघनित है। इसका अर्थ है कि वहाँ कोई बल कार्य कर रहा है। वह कौनसा बल है? सूक्ष्म आकार है, तो क्या आप परमात्मा को कण रूप में मानेंगे? हवा का आकार बता सकते हैं? आकाश जो मूल कणों से सूक्ष्म है, उसका क्या आकार है? प्रकृति का क्या आकार है? वस्तुतः आकार वाली बात मूल कणों से सूक्ष्मता की ओर जाने पर ही समाप्त हो जाती है। परमात्मा प्रकृति और यहाँ तक कि आत्मा से भी सूक्ष्म है, वहाँ आकार की बात करना मूर्खतापूर्ण है। जिसका आकार है, वह सीमित होगा। जो सीमित है, वह अनन्त नहीं, जो अनन्त नहीं, वह सर्वव्यापक नहीं और जो सर्वव्यापक नहीं, वह परमात्मा नहीं।

कठोपनिषद् पढ़ लिया होता, तो मूर्खतापूर्ण बातें न करते।

अशब्दमस्पर्शमरूपमव्ययं तथाऽरसं नित्यमगन्धवच्च यत्।
अनाद्यनन्तं महतः परं ध्रुवं निचाय्य तन्मृत्युमुखात् प्रमुच्यते॥ (१.३.१५)

अर्थात् वह 'परतत्त्व' जिसमें न शब्द है, न स्पर्श और न रूप है, जो अव्यय है, जिसमें न कोई रस है और न कोई गन्ध है, जो नित्य है, अनादि तथा अनन्त है, 'महान् आत्मतत्त्व' से भी उच्चतर (परे) है, ध्रुव (स्थिर) है, उसका दर्शन करके मृत्यु के मुख से मुक्ति मिल जाती है।

अशरीरं शरीरेष्वनवस्थेष्ववस्थितम्।
महान्तं विभुमात्मानं मत्वा धीरो न शोचति॥ (१.२.२२)

अर्थात् शरीरों में 'अशरीरी', अस्थिर पदार्थों में 'स्थित'-तत्त्व, 'महिमामय' 'विभुव्यापी आत्मा' का साक्षात्कार करके ज्ञानी एवं धीर पुरुष शोक नहीं करते।

मुण्डकोपनिषद् में ऋषि लिखते हैं-

दिव्यो ह्यमूर्तः पुरुषः स बाह्याभ्यन्तरो ह्यजः।
अप्राणो ह्यमनाः शुभ्रो ह्यक्षरात्परतः परः॥ (२.१.२)

वह दिव्य अमूर्त 'पुरुष', वही बाह्य तथा आन्तर (सत्य) है एवं वह 'अज' है; वह प्राणों से परे (अप्राण) एवं मन से परे (अमन) है, वह शुभ्र ज्योतिर्मय एवं अक्षर से भी परे 'परमात्मतत्त्व' है।

स पर्यगाच्छुक्रमकायमव्रणमस्नाविरꣳ शुद्धमपापविद्धम्।
कविर्मनीषी परिभूः स्वयम्भूर्याथातथ्यतोऽर्थान्
व्यदधाच्छाश्वतीभ्यः समाभ्यः॥ - यजुर्वेद ४०/८

आकार के निषेध का अर्थ सत्ता का निषेध नहीं है। क्या भौतिकी के नियमों का कोई आकार है? नहीं, फिर भी उनकी सत्ता है। सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में प्रत्येक कण, लोक-लोकान्तर भौतिकी के नियमों के अनुसार कार्य कर रहा है। आकाश निराकार है, पर शून्य नहीं।

यदि परमात्मा का आकार है, तो वह सीमित होगा। जिसका आकार है, वह भौतिक द्रव्य है और जो भौतिक द्रव्य है, वह प्रकृति से निर्मित है। क्या परमात्मा को प्रकृति से निर्मित माना जा सकता है?

यदि आकार है, तो कोई न कोई सीमा होगी। यदि सीमा है, तो वह परिभाषेय है। यदि परिभाषेय है, तो 'अनिर्वचनीय' नहीं। अतः 'अनिर्वचनीय आकार' एक self & contradictory concept है।

आप अनिर्वचनीय वस्तु को साकार कैसे कह सकते हैं? निराकार वस्तु ही अनिर्वचनीय हो सकती है, साकार नहीं। जिसे उपनिषद् **'अणोरणीयान्महतो महीयानात्मास्य...'** कहकर सूक्ष्म से सूक्ष्म एवं महान् से महान् कहते हैं, वह साकार कैसे हो सकता है? कोई भी आकार या तो सूक्ष्म होगा या महान् होगा, वह सूक्ष्म व महान् दोनों रूपों वाला नहीं हो सकता। केवल निराकार वस्तु ही सूक्ष्म व महान् दोनों रूप वाली हो सकती है।

निं उपसर्ग का अर्थ= पृथक्, रहित, परे, अभाव।

जैसे-

निरञ्जन= गुणों से पृथक्
निर्विकार= विकार रहित
निर्गुण= गुणों से परे
निर्बल= बल का अभाव आदि

यहाँ 'अनिर्वचनीय' शब्द से गुण नहीं, गुणातीतता जाननी चाहिये। इसी प्रकार निराकार से आकारातीत समझना चाहिए।

"जैसे 'अनुदरा कन्या' का अर्थ 'पेट से रहित' नहीं, बल्कि 'सूक्ष्म पेट वाली' कन्या है।" यह उदाहरण यहाँ अप्रासंगिक है। क्योंकि कन्या एक भौतिक शरीर वा द्रव्य है। द्रव्य में सूक्ष्म-स्थूल का भेद सम्भव है, लेकिन परमात्मा भौतिक द्रव्य नहीं है और भौतिक द्रव्य न होने पर 'सूक्ष्म आकार' का प्रश्न ही नहीं उठता।

अब हम आपसे यह पूछना चाहेंगे कि आपको ईश्वर को साकार कहने की इतनी हठ क्यों है? क्या आप इससे मूर्ति सिद्ध करना चाहते हैं? यदि हाँ, तो बनाइए अपनी दृष्टि में अनिर्वचनीय आकार वाली मूर्ति। बनाइए निम्न वेद मन्त्रों में वर्णित ईश्वर की मूर्ति-

एतावानस्य महिमातो ज्यायाँश्च पुरुषः। पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि॥ - यजुर्वेद ३१/३
नाभ्याऽआसीदन्तरिक्षꣳशीर्ष्णो द्यौः समवर्त्तत।
पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ२॥ऽअकल्पयन्॥
- यजुर्वेद ३१/१३

आप तो महापुरुषों की मूर्तियों को ही तथाकथित अनिर्वचनीय ब्रह्म की मूर्ति मानकर उनकी पूजा कर रहे हैं। क्योंकि-

१. इससे आपका व्यापार चलता है?
२. कोई भी स्वयं को ब्रह्म का अवतार घोषित करके भोली-भाली सनातनी जनता को ठग सकता है?
३. इससे कोई नाना ईश्वर की कल्पना करके हिन्दू समाज (वस्तुतः आर्यों) को खण्ड-खण्ड कर सकता है?
४. वह सच्चे ब्रह्म से लोगों को दूर कर सकता है?
५. वह भारत को और भी दुर्बल व खण्डित कर सकता है?

बोलें! आप यही चाहते हैं?

आपको निराकार शब्द से इतना विरोध है कि मिथ्या व निराधार लेख लिखने बैठ गये। आपको साकारवादियों द्वारा नाना कल्पित देवी-देवताओं की पूजा के नाम पर निरीह पशुओं का रक्त बहाना तो स्वीकार्य है, देवदासी प्रथा के रूप में दुराचरण स्वीकार है, भगवान् शिव जैसे महान् योगी व वैज्ञानिक की पूजा के नाम पर उपस्थेन्द्रिय की पूजा एवं नाना मादक पदार्थों का सेवन करना-कराना स्वीकार्य है, योगेश्वर भगवान् श्रीकृष्ण की भक्ति के नाम पर अश्लील रासलीलाएँ तो स्वीकार्य हैं, परन्तु निराकार, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ, सृष्टिकर्त्ता ब्रह्म की पातंजल वेदोक्त अष्टांग योग की पद्धति स्वीकार्य नहीं?

ध्यान रखें कि जिन ऋषि दयानन्द को आप अपमानित करने का प्रयास करते हैं, उन्हीं की कृपा से आपके मन्दिर, यज्ञोपवीत, शिखा व तिलक सुरक्षित रह पाए हैं, अन्यथा आप व हम सब ईसाई व मुसलमान बन गए होते और भारत स्वतन्त्र भी नहीं होता। क्या आप नहीं जानते हिन्दुओं को बचाने के लिए आर्यसमाजियों ने ही सबसे अधिक बलिदान दिये हैं? आपसे जानना चाहेंगे कि अन्य मत-पन्थों के विरुद्ध आपने कितने लेख लिखे?

जहाँ तक आपके निराकार ईश्वर को काल्पनिक कहने की बात है, तो ब्रह्मा जी के चार सिर, हनुमान जी की पूँछ और उनके द्वारा सूर्य को मुँह में रख लेना, रावण के १० सिर और २० भुजा होना, रीछ

जामवन्त का वेदों का विद्वान् होना, महादेव शिव की जटाओं से गंगा निकाल देना, महर्षि अगस्त्य द्वारा समुद्र को पी लेना, धरती का शेष नाग पर टिकना, सूर्य के रथ को सात घोड़ों द्वारा खींचना, एक लाख योजन का मत्स्यावतार, एक लाख योजन का शूकर अवतार, ब्रह्मवैवर्त पुराण के अनुसार श्रीकृष्ण जी द्वारा कुब्जा दासी का उद्धार करना और पाँच लाख गौओं के माँस से तीन करोड़ ब्राह्मणों का नित्य भोजन करना, भागवत पुराण के अनुसार ब्रह्मा जी द्वारा स्वपुत्री गमन, शिवपुराण के अनुसार शिव जी के आदेशानुसार भैरव द्वारा ब्रह्मा जी का सिर काटा जाना, विष्णु जी की नाभि से कमल और कमल से ब्रह्मा जी का उत्पन्न होना, गणेश जी द्वारा ब्रह्मा जी का दाढ़ी पकड़कर पिटाई करना, भगवान् शिव द्वारा अपने पुत्र का सिर काटकर हाथी का जोड़ देना, दारुवन में शिव जी क्या लेने गए थे... इनको आप क्या कहेंगे? ये आप पर ही छोड़ते हैं, परन्तु हम इन पाप लीलाओं से अवश्य लज्जित हैं। आर्य समाज इन महापुरुषों को अत्यन्त पवित्र सर्वोच्च कोटि के योगी और वैज्ञानिक मानता है। हमें गर्व है कि हम इन महापुरुषों के वंशज वा अनुयायी हैं। जय माँ वेदभारती!

- डॉ. मधुलिका आर्या; उप-प्राचार्या
विशाल आर्य, प्राचार्य
वैदिक एवं आधुनिक भौतिकी शोध संस्थान
(श्री वैदिक स्वस्ति पन्था न्यास द्वारा संचालित)
वेद विज्ञान मन्दिर, भागलभीम, भीनमाल

प्रथम प्रभाव व अच्छी आदतों को चिरस्थायी बनाने में ही निहित है मनुष्य का वास्तविक रुपान्तरण

प्रथम मिलन बहुत महत्त्वपूर्ण होता है। कई बार वो हमारे जीवन को पूरी तरह से बदल देता है, रूपांतरित कर देता है, हमें सातवें आसमान पर पहुँचा देता है। क्योंकि उस समय हम अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शित करने में पूरा जोर लगा देते हैं। जीवन में किसी कार्य में सफलता भी उन्हीं लोगों को मिलती है जो उस कार्य के प्रारम्भ में अपनी सारी शक्ति अथवा ऊर्जा लगा देते हैं। उसी सम्पूर्ण शक्ति अथवा सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन के कारण ही जीवन में खूबसूरत रिश्तों की शुरुआत होती है। लेकिन यदि वो सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन दिखावा मात्र अथवा दूसरों को मूर्ख बनाने के लिए होता है तो उसका विपरीत प्रभाव भी पड़ सकता है।

यदि किसी खूबसूरत रिश्ते को स्थायित्व प्रदान करना है अथवा जीवन के अन्य क्षेत्रों में सफलता के पथ पर अग्रसर होना है तो प्रथम मिलन के समय सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन को न केवल मन से करना अनिवार्य है अपितु उसे चिरस्थायी बनाना भी अपेक्षित है। इसके लिए प्रथम मिलन के अवसर पर जिस शिष्टाचार, विनम्रता, स्वच्छता व सौंदर्य-बोध का परिचय दिया जाता उसे नियमित रूप से व्यवहार में लाना ही होगा। कहते हैं कि प्रथम प्रभाव या पहली छवि चिरस्थायी होती है। फर्स्ट इम्प्रैशन इज़ द लास्ट इम्प्रैशन। इसलिए जब भी हम किसी से पहली बार मिलते हैं तो बहुत सतर्कता से काम लेते हैं और मिलने वाले पर अपना अच्छे से अच्छा प्रभाव छोड़ने में कोई क़सर नहीं रख छोड़ते। सलीक़े से साफ-सुथरे कपड़े पहनकर मिलने जाते हैं। धूम्रपान नहीं करते। प्रयास करते हैं कि मुख अथवा वस्त्रों से किसी भी प्रकार की अप्रिय गन्ध न आने पाए।

शिष्टाचार ही नहीं तमाम औपचारिकताओं का भी पूरी तरह से निर्वाह करते हैं। पहली बार मिलने वाले से ही नहीं उस समय वहाँ उपस्थित अन्य सभी से भी अत्यन्त विनम्रता से पेश आते हैं। क्रोध जैसी चीज आसपास नहीं फटकने पाती। ऊँची आवाज में बात करने का तो प्रश्न ही नहीं उठता। सहयोग की भावना का प्रदर्शन ही नहीं वास्तविक सहयोग करने के लिए भी तत्पर रहते हैं। आदर्शों और उदात्त जीवन मूल्यों की बात करते हैं। यथासम्भव नैतिकता का दामन थामे रहते हैं। यदि हमें पहली बार किसी के साथ भोजन करना पड़ जाए तो हम न केवल अत्यन्त शिष्टतापूर्वक भोजन करते हैं अपितु सही मात्रा में भी करते हैं। घर हो या होटल भोजन परोसने वाले से भी सम्मान से पेश आते हैं।

विषम परिस्थितियों में कोई अप्रिय घटना घटित हो जाए तो भी प्रतिक्रिया व्यक्त करने के बजाय शान्त-सौम्य बने रहते हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि हम स्वयं को एक बहुत अच्छे व्यक्ति के रूप में

प्रस्तुत करने का पूरा प्रयास करते हैं। एक आदर्श, सुसभ्य, शिष्ट व सत्यनिष्ठ व्यक्ति के रूप में। लेकिन देखना ये भी है कि यदि बाद में हमारा व्यवहार बदल जाता है तो केवल फर्स्ट इम्प्रैशन अथवा प्रथम प्रभाव के आधार पर हम कितने दिनों तक लोगों को प्रभावित कर पाएँगे।

स्थितियाँ बदलने पर उनके प्रभाव का बदलना भी अनिवार्य है। जैसे ही हमारा व्यवहार बदलेगा लोगों का व्यवहार और प्रतिक्रिया भी बदल जाएगी। न केवल हमारी पूर्व निर्मित सौम्य छवि धूमिल हो जाएगी अपितु उसका रूप बहुत अधिक विकृत हो जाएगा। लोग हमारी पहली छवि पर भविष्य में कभी भी विश्वास नहीं कर पाएँगे। हमें लोगों को ये सोचने अथवा कहने का मौक़ा ही नहीं देना चाहिए कि पहली बार मिले थे तब तो बड़े आदर्शवादी होने का दिखावा कर रहे थे।

एक प्रश्न उठता है कि क्या हम अच्छे इंसान नहीं होते या हैं? निःसन्देह हमसे अच्छा कोई नहीं हो सकता यदि हम अपनी उन सभी आदतों अथवा व्यवहार को हमेशा प्राथमिकता दें, उन सभी आदतों अथवा व्यवहार को जीवन में स्थायी रूप से अपने आचरण में सम्मिलित कर लें जिनको हम किसी से पहली बार मिलने पर व्यवहार में लाते हैं। ये कठिन अवश्य हो सकता है असम्भव नहीं। मैं ऐसे अनेक व्यक्तियों को जानता हूँ जो हर बार हमेशा बड़े उत्साह से मिलते हैं और यथोचित् अभिवादन करते हैं। आगे से पहले बोलने का प्रयास करते हैं। यदि कोई व्यक्ति मिलने पर हर बार अभिवादन करने की पहल करता है तो उसका कुछ घट नहीं जाता अपितु लोग उसे पसन्द करने लगते हैं और उसका मन से सम्मान करने लगते हैं। इसी प्रकार से दूसरी अच्छी आदतों और व्यवहार के न बदलने व उनके स्थायी होने का सम्पर्क में आने वाले व्यक्तियों पर बड़ा अच्छा प्रभाव पड़ता है।

कई लोग मानते हैं कि जब हम किसी से पहली बार मिलते हैं तो उस पर अच्छा प्रभाव डालना सम्भव है लेकिन रोज-रोज शिष्टाचार का पालन करना सम्भव नहीं। अत्यधिक औपचारिकता अथवा शिष्टाचार से जीवन में सहजता नहीं रहती। व्यवहार में एक कृत्रिमता-सी आ जाती है। ये बात किसी भी तरह से ठीक नहीं है। रोज-रोज सन्तुलित व पौष्टिक भोजन करने से क्या हमारा स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता? जिस प्रकार से नियमित रूप से सन्तुलित व पौष्टिक भोजन करने से हमारा स्वास्थ्य ठीक रहता है उसी प्रकार से हमेशा शिष्टाचार का पालन करने से हमारे सम्बन्ध बहुत अच्छे बने रहते हैं। कुछ लोगों का ये भी मानना है कि शिष्टाचार, सद्गुण अथवा अच्छी आदतें जन्मजात होती हैं उन्हें बाद में नहीं सीखा जा सकता। यह अत्यन्त भ्रामक विचार है। कुछ विशेषताएँ जन्मजात होती हैं लेकिन अधिकांश आदतें हम अपने परिवेश से सीखते हैं।

हम अनुकरण से उन्हें सीखते हैं और स्वयं में विकसित करते हैं। शिक्षा संस्थानों का इसमें महत्त्वपूर्ण योगदान होता है। स्कूलों व कॉलेजों में हम जितना सीखते हैं वो सब जन्मजात नहीं मिल सकता। शिष्टाचार व अच्छी आदतें सीखने अथवा व्यवहार में सकारात्मक परिवर्तन करने के लिए योग्य व्यक्तियों अथवा संस्थानों से प्रशिक्षण भी ले सकते हैं।

हम प्रयास करके अच्छी आदतें सीख सकते हैं और उन्हें अपने जीवन में स्थान दे सकते हैं इसमें सन्देह नहीं। इसका उलटा भी उतना ही सही है क्योंकि ये हमारे चयन पर निर्भर करता है। कहा गया है मनुर्भव। क्या हम मनुष्य नहीं हैं? वास्तव में मनुष्य बनना पड़ता है। अच्छी आदतें ही हमें मनुष्य बनाने में सक्षम होती हैं।

जब तक हममें अच्छी आदतें हैं हम मनुष्य हैं। जब हममें अच्छी आदतों के स्थान पर बुरी आदतें अथवा विकार उत्पन्न होने प्रारम्भ हो जाते हैं तो हम मानव से दानव होने की प्रक्रिया में आ जाते हैं। हमें न केवल अच्छे लोगों की अच्छी आदतों का अनुकरण करके स्वयं में अच्छी आदतें विकसित करनी चाहिए अपितु उन आदतों को निरन्तर व्यवहार में लाकर अपने परिवेश को भी सकारात्मक रूप से प्रभावित करने का प्रयास करते रहना चाहिए जिससे पूरा समाज शिष्टाचार के दायरे में सम्मिलित हो जाए। यदि हम हमेशा अच्छा व्यवहार करेंगे तो दूसरे लोग कब तक उसकी उपेक्षा करेंगे? उन्हें भी स्वयं को बदलना पड़ेगा। कुछ रोगों और विकारों की तरह ही अच्छी आदतें भी संक्रामक होती हैं लेकिन अच्छी आदतें संक्रामक तभी हो सकती हैं जब हम उन्हें अपने व्यवहार में लाएँ।

जब हम किसी से पहली बार मिलने पर अच्छी तरह से पेश आ सकते हैं तो बाद में अथवा हमेशा क्यों नहीं? यदि पहली बार मिलने पर अच्छा प्रभाव छोड़ना नाटक मात्र है तो इस नाटक को बार-बार क्यों नहीं दोहराया जा सकता? अच्छाई अथवा अच्छा प्रभाव डालने के इस नाटक को इतनी बार दोहराइए कि वो जीवन की वास्तविकता बन जाए।

यदि हम ऐसा कर पाएँगे तो नुकसान नहीं लाभ ही होगा। हम अच्छी आदतों व व्यवहार के अभ्यस्त हो जाएँगे। वैसे भी हम कुछ लोगों से तो हमेशा ही अच्छी तरह से पेश आते हैं। जब हम कुछ लोगों से हमेशा अच्छी तरह से पेश आ सकते हैं अथवा इस प्रकार का नाटक कर सकते हैं तो नियमित रूप से सम्पर्क में आने वाले अन्य सभी लोगों से भी हमेशा अच्छी तरह से पेश आ सकते हैं अथवा इस प्रकार का नाटक कर सकते हैं। इसी में निहित है मनुष्य का वास्तविक रूपांतरण व विकास। हमें हर हाल में हमेशा ही अपने अच्छे व्यवहार से लोगों पर अच्छा प्रभाव डालना चाहिए और इसके लिए स्वयं को महत्त्व न देकर जो व्यक्ति हमें ये अवसर उपलब्ध करवाते हैं उनके प्रति कृतज्ञ होना चाहिए।

जब भी हम किसी व्यक्ति से पहली बार मिलते हैं तो बहुत अच्छी तरह से उसका अभिवादन करने का प्रयास करते हैं। उस समय हम शिष्टाचार का पूर्ण रूप से पालन करते हुए चेहरे पर मुस्कान भी बनाए रखते हैं। साथ ही भावों के अनुरूप हमारी बॉडी लैंग्वेज भी अत्यंत अनुकूल व सकारात्मक बनी रहती है लेकिन जैसे-जैसे हमारा मिलना-जुलना आम हो जाता है हम न केवल इन सब बातों की परवाह करना छोड़ देते हैं अपितु कई बार उपेक्षात्मक तरीके से भी पेश आने लगते हैं। अभिवादन करना तो दूर दूसरे के अभिवादन का ठीक से उत्तर भी नहीं देते। आखिर क्यों? क्योंकि हम एक दूसरे की कमियों को

जान लेते हैं अथवा सम्बन्धों से होने वाले लाभ-हानि का मूल्यांकन करने लगते हैं और उसी के अनुरूप व्यवहार करना आरम्भ कर देते हैं। हमें इस प्रकार के व्यवहार से बचना चाहिए।

हमें लाभ-हानि का आकलन करने व दूसरों के दोष अथवा कमियाँ देखने के बजाय अपने व्यवहार के बारे में अधिक सतर्क रहना चाहिए। दूसरों के व्यवहार के कारण हम अपना व्यवहार क्यों बिगाडें अथवा अपने व्यक्तित्व को कमजोर क्यों करें?

हम अपने व्यवहार के लिए उत्तरदायी हो सकते हैं दूसरों के व्यवहार के लिए नहीं लेकिन अपना व्यवहार बदल कर निश्चित रूप से दूसरों को बदलने का अवसर ही प्रदान करते हैं।

दूसरों के व्यवहार के कारण हमारा व्यवहार बदल न जाए इसके लिए अनिवार्य है कि हम हर व्यक्ति से हर बार ये सोचकर ही व्यवहार करें जैसे आज पहली बार उससे मिल रहे हैं।

इससे न केवल सम्बन्धों में आत्मीयता व ऊर्जस्विता बनी रहेगी अपितु लगातार सकारात्मक रहने के कारण मिलने वाले लाभ भी हमें अनायास ही मिल जाएँगे। जब हम किसी को दोनों हाथ जोड़कर और मस्तक झुकाकर नमस्कार करते हैं तो इससे हमें स्वाभाविक रूप से व्यायाम के लाभ मिलते हैं व जब हम मुस्कुराकर किसी का स्वागत करते हैं तो ध्यान के लाभ मिलते हैं। बार-बार हमारी मनोदशा सकारात्मक होने से हम तनावमुक्त व स्वस्थ रहते हैं। किसी से मिलते समय यदि हम किसी प्रकार के तनाव अथवा दबाव में होते हैं तो दूसरों से अच्छा व्यवहार करने के प्रयास में हम उस तनाव अथवा दबाव को भूल जाते हैं जिससे उसके दुष्प्रभाव से बच जाते हैं। ये स्थिति हमारे स्वास्थ्य के लिए भी बहुत अच्छी होती है। **क्रमशः.....**

ए. डी. 106 सी., पीतम पुरा
दिल्ली - 110034
चलभाष- 9555622323

फार्म.IV

समाचार पत्र के स्वामित्व और अन्य विशिष्टियों के बारे में विवरण जो प्रत्येक वर्ष फरवरी के अंतिम दिन के पश्चात् प्रथम अंक में प्रकाशित किया जायेगा।

१. प्रकाशन का स्थानः– नवलखा महल, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर (राज.) ३१३००१

२. प्रकाशन की नियत अवधिः– मासिक

३. मुद्रक का नामः– अशोक कुमार आर्य राष्ट्रीयताः– भारतीय
पताः– नवलखा महल, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर (राज.) ३१३००१

४. प्रकाशक का नामः– अशोक कुमार आर्य राष्ट्रीयताः– भारतीय
पताः– नवलखा महल, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर (राज.) ३१३००१

५. सम्पादक का नामः– अशोक कुमार आर्य राष्ट्रीयताः– भारतीय
पताः– नवलखा महल, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर (राज.) ३१३००१

६. उन व्यक्तियों के, जो समाचार पत्र के स्वामी हैं और उन भागीदारों या शेयरधारकों के, जो कुल पूँजी के 1 प्रतिशत से अधिक अंश के धारक हैं, नाम और पते।
श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, नवलखा महल गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर (राज.) ३१३००१

मैं अशोक कुमार आर्य घोषणा करता हूँ कि ऊपर दी गई विशिष्टियाँ मेरे सर्वोत्तम ज्ञान और विश्वास के अनुसार सत्य हैं।

तारीखः– 07.04.2026

प्रकाशक के हस्ताक्षर

सत्यार्थ मित्र बनें

न्यास के कार्यों को गति प्रदान करने के लिए 5100 रु. (पाँच हजार एक सौ) वार्षिक का सहयोग प्रदान करें।

आपका मात्र ५१०० रुपये वार्षिक का सहयोग न्यास के कार्य को अद्वितीय गति प्रदान कर सकता है।

हमारे अत्यन्त आत्मीय बन्धुजन!

इस अपील को मेरी व्यक्तिगत अपील कहिए अथवा न्यास की अपील समझिए। यह आप तक पहुँचे और आपकी आत्मीयता हमें प्राप्त हो, इसी नाते हम प्रथम बार अर्थ सहयोग का निवेदन कर रहे हैं।

आपको यह जानकारी होगी ही कि नवीन, आकर्षक प्रकल्पों का निर्माण कर न्यास सहस्रों लोगों तक वैदिक संस्कृति के मूल तत्त्वों को अग्रप्रसारित कर रहा है। सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, उदयपुर द्वारा आर्यावर्त्त चित्रदीर्घा में वेद, वेद के प्रादुर्भाव, भारतीय ऋषियों के योगदान, योगिराज श्री कृष्ण और भगवान राम के पावन जीवन–चरित्र, मेवाड़ की माटी के गौरव महाराणा प्रताप, आर्यसमाज के रत्नों, भारत को स्वतन्त्रता दिलाने वाले क्रान्तिकारियों, सत्यार्थ प्रकाश चित्रावली एवं महर्षि दयानन्द के जीवन चरित्र के माध्यम से व संस्कार वीथिका के माध्यम से मानव निर्माण की पूरी योजना आगन्तुकों के सामने रखी जा रही है। इस क्रम में मानों महर्षिवर की संस्कार विधि मूर्तरूप में चित्रित हो गयी है।

वहीं उच्चतम गुणवत्ता के 3D थियेटर का निर्माण कर महापुरुषों के जीवन–चरित्र का दिग्दर्शन भी कराया जा रहा है। यहाँ यह अंकित करना आवश्यक है कि मुक्त हस्त से दिए हुए उदार अर्थ के सहयोग से भव्य संस्कार वीथिका परिसर व थियेटर का निर्माण माननीय सुरेश चन्द्र जी आर्य; अहमदाबाद और माननीय दीनदयाल जी गुप्त; कोलकाता के पवित्र सहयोग से हो पाया है एवं संस्कारों का निर्माण आर्यजनों के सामूहिक सहयोग से एकत्रित धन से हुआ है। परन्तु इनको गति देने के लिए, वर्ष में सारे प्रकल्प 365 दिन गतिशील रहें, इसके लिए आवश्यक है कि कुछ लोग आगे आएँ और प्रतिवर्ष अपना योगदान दें, इसीलिए आपसे यह निवेदन कर रहा हूँ। **मैं व्यक्तिगत रुप से अनुगृहीत होऊँगा अगर आप मात्र 5100 सौ रुपये प्रतिवर्ष देने का संकल्प लेंगे।** न्यास का एकाउन्ट नम्बर भी नीचे अंकित है। न्यास को प्रदत्त दान आयकर अधिनियम की धारा 80G के अन्तर्गत कर मुक्त है।

हमें आशा ही नहीं विश्वास है कि आप हमारी प्रार्थना को स्वीकार कर 5100 रुपये वार्षिक का यह अर्थ सहयोग प्रदान करने की कृपा करेंगे।

निश्चित मानिये आपके सहयोग से जो ऊर्जा और गति हमें मिलेगी वह लाखों लोगों तक वैदिक संस्कृति के उदात्त मूल्यों को सम्प्रेषित करने में मील का पत्थर साबित होगी।

निवेदक- अशोक आर्य, अध्यक्ष–न्यास

चैक श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें। अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया, मेन ब्रांच, दिल्ली गेट, उदयपुर बैंक एकाउन्ट का विवरण : AC. No. : 310102010041518, IFSC CODE- UBIN 0531014, MICR CODE- 313026001 में जमा करा कृपया सूचित करें।

कब्ज (विबन्ध)

वर्तमान समय की व्यस्त एवं अनियमित दिनचर्या, विरुद्ध आहार-विहार, फास्ट फूड एवं तले हुए पदार्थों का अत्यधिक सेवन, भोजन में पौष्टिकता की अपेक्षा स्वाद को प्राथमिकता देना, रात्रि में देर से सोना एवं प्रातः देर से उठना, व्यायाम का अभाव, निश्चित समय पर भोजन न करना, हरी सब्जियाँ, सलाद व फलों जैसे फाइबरयुक्त पदार्थों का अल्प सेवन या सेवन न करना, चिन्ता, शोक, वेगधारण (मल-मूत्र व अपान वायु के वेग को रोकना), वृद्धावस्था, रक्त की कमी, अन्तःस्रावी ग्रंथियों के स्राव का असंतुलन, चाय, कॉफी आदि का अतिसेवन प्रभृति बहुत से कारणों से आजकल प्रायः ७०% लोग कब्ज से पीडित रहते हैं।

प्रायः कब्ज की प्रारम्भिक अवस्था में लोग इस पर ध्यान नहीं देते या कोई छोटी-मोटी गोली या दवा लेकर काम चलाते रहते हैं। सामान्य सी दिखने वाली कब्ज की समस्या समय बीतने के साथ बहुत सी गम्भीर बीमारियों का कारण बन जाती है। आयुर्वेद में कब्ज को बहुत से रोगों की जननी माना गया है। गैस, एसिडिटी, अफारा, पेट दर्द, आतों की समस्यायें, भूख न लगना, कोलेस्ट्रोल वृद्धि, बीपी, जोड़ों का दर्द आदि रोगों के मूल में कब्ज व पाचन की गड़बड़ी मुख्य कारण है।

आन्त्र ग्रंथियाँ खाये हुए भोजन के पौष्टिक द्रव्यों का अवशोषण करती हैं जिनसे शरीर पुष्ट होता है। कब्ज रहने पर आन्त्र ग्रंथियाँ अनावश्यक पदार्थों का भी अवशोषण करने लगती हैं। अनावश्यक पदार्थों का शरीर से उत्सर्जन आवश्यक होता है। जब इन अनावश्यक पदार्थों का शोषण हो जाता है तो शरीर में अनेक प्रकार के रोग उत्पन्न होने लगते हैं। जिन रोगों का मूल कारण कब्ज रहता है। जैसे- चर्मरोग, आन्त्रकृमि, जननेन्द्रिय रोग, वातरोग, अनिद्रा, घबराहट, मानसिक अस्थिरता, अर्श, भगन्दर आदि।

चिकित्सा- कब्ज की समस्या से पूर्णतः मुक्ति केवल औषध प्रयोग से सम्भव नहीं है, इसके लिए हमें अपनी लाइफ स्टाइल में बदलाव करना आवश्यक है। अपनी दिनचर्या को ऋतुओं के अनुकूल व व्यवस्थित रखें। खाने का समय और तरीका सही करें। भोजन का चुनाव अपनी प्रकृति

एवं ऋतु के अनुकूल करें। ज्यादा तले हुए एवं गरिष्ठ भोज्य पदार्थों के सेवन से बचें। फाइबर युक्त हल्का भोजन करें। सप्ताह में एक दिन उपवास करें अथवा केवल फलाहार पर रहें। मिश्रित अनाज का मोटा आटा प्रयोग करें। प्रातः खाली पेट गुनगुने जल में एक नींबू निचोड़कर पीवें। प्रातः आधा से एक घण्टा सैर करें और हल्का व्यायाम करें। योगासनों में पादहस्तासन, मयूरासन, हस्तपाद अंगुष्ठासना, पश्चिमोत्तानासन, सर्पासन आदि का तथा कपालभांति, भस्त्रिका, अनुलोम विलोम आदि प्राणायामों का अभ्यास योग चिकित्सक के निर्देश में करें।

औषध चिकित्सा- आजकल बाजार में बहुत सी कब्ज निवारक औषधियाँ उपलब्ध हैं। रोगी की अवस्था व प्रकृति के अनुसार चिकित्सक की सलाह से उनका प्रयोग कर सकते हैं। कुछ औषधियों में तीक्ष्ण विरेचक द्रव्य होते हैं, उनके प्रयोग से एक बार तो उदर शुद्धि हो जाती है लेकिन बार-बार प्रयोग करने पर आंतों की स्वाभाविक पुरःसरण क्रिया शिथिल हो जाती है अतः उनका प्रयोग आपात्काल में ही करना चाहिए। नीचे एक योग जिसे स्वयं घर में बनाकर तैयार कर सकते हैं लिखा जा रहा है। इससे कब्ज में बहुत अच्छा लाभ होता है। यह बिना मरोड़ सोम्य विरेचन का कार्य करता है और यह आंतों को कोई नहीं पहुँचाता है।-

१. हरड़ बड़ी (गुठली निकाली हुई)= ४० ग्राम
२. बहेड़ा (गुठली निकला हुआ)= ३० ग्राम
३. आंवला (गुठली निकला हुआ)= ३० ग्राम
४. अजवायन= २० ग्राम
५. सौंफ= २० ग्राम
६. पौदीना की पत्ती= २० ग्राम
७. सैंधव लवण= २० ग्राम
८. काला नमक= २० ग्राम
९. शुद्धनौसादर= १० ग्राम
१०. इसबगोल की भूसी= १०० ग्राम

इन सभी को कूटपीस कर पाऊडर बनाकर रख लेवें। एक से दो चम्मच सोते समय गर्म पानी से सेवन करें।

जो स्वयं दवा नहीं बनाना चाहते वे बाजार में उपलब्ध एरण्ड भ्रस्ट हरड़े, त्रिफगोल, पंचसकार चूर्ण, तरुणी कुसुमाकर चूर्ण, त्रिफला चूर्ण, अभयारिष्ट आदि में से किसी औषध का प्रयोग कर सकते हैं एवं ऊपर बताये आहार-विहार व पथ्यापथ्य का पालन करें।

वेदमित्र आर्य
सेवानिवृत्त आयुर्वेद चिकित्साधिकारी
१३- श्रीराम नगर, हिरणमगरी सेक्टर- ६
उदयपुर (राज.)

सत्यार्थप्रकाश प्रचार सहयोग निधि

सत्यार्थ प्रकाश से उत्कृष्ट कोई ग्रन्थ नहीं जिसके प्रकाशन में आपकी पुण्य दान राशि का प्रयोग हो। सत्यार्थ प्रकाश प्रचार हेतु, कम राशि में अधिक संख्या में यह महान् ग्रन्थ जन-जन के हाथों में पहुँच सके, एतदर्थ निम्न योजना निर्मित की गई है-

सत्यार्थप्रकाश के प्रचार हेतु कृपया निम्नानुसार सहयोग कर लागत मूल्य से आधी कीमत में सत्यार्थप्रकाश का दिया जाना सुनिश्चित करें। आपके द्वारा सहयोगार्थ प्रदान की गई राशि के समक्ष अंकित प्रतियों पर आपका अथवा आपके किसी प्रियजन का चित्र ग्रन्थ के कवर पर दिया जावेगा।

1000 प्रतियों के प्रकाशन हेतु 25000 रुपये का दान देने का श्रम करें। 10 प्रतियाँ निशुल्क आपके पास भेजी जाएँगी।

आपका दान आयकर अधिनियम की धारा ८० जी के अन्तर्गत करमुक्त होगा। राशि न्यास के नाम ड्राफ्ट या चैक द्वारा भेजें अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया, उदयपुर खाता क्रमांक 310102010041518, IFSC-UBIN 0531014 में जमा कर सूचित करें।

अशोक आर्य, अध्यक्ष-न्यास　　**भवानीदास आर्य**, मंत्री-न्यास　　**डॉ. अमृत लाल तापड़िया**, संयुक्तमंत्री-न्यास

कहानी दयानन्द की

गतांक से आगे .....

कथा सरित

अनपढ़ गँवार भी अन्याय कारणों से शिष्यों की भीड़ जमा करने से विरत् नहीं रहते क्योंकि जिसके जितने ज्यादा शिष्य होते हैं वह उतना ही बड़ा सन्त माना जाता है। अगर महर्षि दयानन्द चाहते तो उनकी शिष्य मण्डली का आकार क्या होता? यह अनुमान ही लगाया जा सकता है। भड़ौच में राजकुमारों के कॉलेज में जाकर आपने अहिंसा परमो धर्म पर जब व्याख्यान दिया तो वहाँ के प्रिंसिपल अभिभूत हो गए। उन्होंने ही स्वामी जी को मैक्समूलर सम्पादित ऋग्वेद भेंट किया। राजकोट में कुछ प्रतिष्ठित लोगों ने स्वामी जी को कहा कि आप अगर मूर्तिपूजा का मण्डन करने लगें तो हम सब आपको शंकर का अवतार मान लेंगे। कितना बड़ा प्रलोभन है यह। पर सदैव की भाँति सत्य की साधना में लीन इस फकीर ने उन वकील साहब को साफ मना कर दिया। हमें सत्य प्रिय है उससे अधिक कुछ भी नहीं।

जैसा कि हमने कई बार लिखा है स्वामी जी के तर्क बड़े सरल परन्तु बड़े ही निर्णायक हुआ करते थे। राजकोट में जीवनराम जी शास्त्री और पंडित महीधर अद्वैतवाद पर शास्त्रार्थ करने आए। स्वामी जी ने कहा कि यदि आप ब्रह्म हैं तो अपने शरीर के साढे तीन करोड़ लोमों में से एक को उखाड़कर पुनः वहीं स्थापित कर दीजिए। वे मौन रह गए। फिर स्वामी जी ने आगे कहा कि ब्रह्म सर्वज्ञ है और आप अल्पज्ञ। आप ब्रह्म कैसे हो सकते हैं? स्वामी जी गुरुडमवाद के घोर विरोधी थे। जब भी कोई उनका शिष्य बनना चाहता था तो उनका कहना होता था हम शिष्य नहीं बनाते। जो हमारे सिद्धान्तों को मानता है वही हमारा शिष्य है और जहाँ तक कान में मंत्र बोलकर शिष्य बनाने की परम्परा है यह अनुचित है। उनका कहना था कि हमारे पास मंत्र देने की कोई फुंकनी नहीं है जिससे हम किसी के कान में मंत्र फूँक दें। और सारे मंत्र तो वेद में हैं ही, हम क्या मंत्र देंगे? इस प्रकार की बातों को कहकर स्वामी जी ने भड़ौच के ठाकुर उमराव सिंह जी को मना कर दिया।

स्वामी जी की वाणी और उपदेशों का ऐसा ही असर था। आर्य समाज स्थापित हो गया। मणिशंकर जटाशंकर प्रधान बने। हरि गोविन्द दास, द्वारका दास और नगीन दास बृजभूषण दास मंत्री का कर्त्तव्य पालने के लिए नियत हुए। राजकोट का आर्य समाज इस प्रकार से वास्तव में भारतवर्ष के प्रारम्भिक आर्य समाजों में से एक था। इसमें सदस्यों की संख्या ३० थी। परन्तु यह आर्य समाज अधिक दिन तक नहीं चल पाया। उस समय राजकोट की स्थिति गम्भीर थी। महाराजा मल्हारराव गायकवड़ की राज्यच्युति पर घर-घर आन्दोलन हो रहा था। सब जगह उसी की चर्चा थी, हलचल मची हुई थी। इसी पर लिखी एक कविता आर्य समाज के मंत्री जी ने मुम्बई गजट और टाइम्स ऑफ इण्डिया में अपने नाम से मुद्रित होने के लिए भेज दी। आर्य समाज के मंत्री प्रधान आदि सरकारी कर्मचारी थे। वहाँ के पोलिटिकल एजेण्ट मिस्टर जेम्स पील अत्यन्त रुष्ट हो गए थे और उन्होंने नगीन दास को बुलाकर उन्हें वकालत से पदच्युत कर दिया। आर्य समाज के दूसरे मंत्री निर्भयराम भी सार्वजनिक कर्मचारी थे।

हर गोविन्द दास इतने भयभीत हुए कि उन्होंने आर्य समाज सम्बन्धी कागज दूसरे स्थान पर भेज दिए। इस सब का परिणाम यह हुआ कि राजकोट में आर्य समाज बन्द ही हो गया।

प्रस्तुति- नवनीत आर्य, नवलखा महल, उदयपुर

प्रतीक बक्शी एक मौन साधक

२२ फरवरी २०२६ को सम्पन्न हुए भव्य लोकार्पण समारोह की सभी व्यवस्थाओं और माइक्रो मैनेजमेंट की आर्य जगत् भूरि-भूरि प्रशंसा कर रहा है। मन्दिर का शिखर तो सभी को दिखाई देता है परन्तु नींव के पत्थर नहीं, जबकि महत्वपूर्ण वही नींव के पत्थर हैं, भव्य भवन उन्हीं के आधार पर टिका होता है। नवलखा महल; उदयपुर के सभी आर्य बन्धुओं, नवलखा महल सांस्कृतिक केन्द्र के कार्यकर्त्ताओं और एनएमसीसी यूथ ने जो शानदार काम किया वह तो इसके पीछे है ही, परन्तु एक व्यक्ति का नाम अगर मैं न लूँ तो कृतघ्नता होगी। वे हैं श्री प्रतीक बक्शी, जो MDH के प्रतिनिधि के तौर पर सारी व्यवस्थाओं के संचालन में केन्द्रीय सूत्र बने हुए थे। सत्यम-शिवम्-सुन्दरम् के आदर्श को मन में विश्लेषित करते हुए आप सभी व्यवस्थाओं को धरातल पर उतारने में साधक बने। समाचार पत्रों में और अन्य स्थानों पर अनेक साथियों के नाम छप जाते हैं परन्तु प्रतीक जी कहीं पर भी सामने नहीं आते। परन्तु ध्यान से देखें तो सफल व्यवस्थाओं की पृष्ठभूमि में वे मजबूती से खड़े हुए दिखाई देते हैं। इसीलिए हमने आपको मौन साधक कहा है। हमारा कर्त्तव्य है कि प्रतीक जी के प्रति, उनके कार्यों के प्रति, उनके समर्पण के प्रति, उनकी दूरदर्शिता के प्रति अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करें। बहुत-बहुत धन्यवाद प्रतीक जी।

संरक्षक मण्डल - सत्यार्थ सौरभ (₹११,०००)

श्री रतिराम शर्मा, श्री रामेश्वर दयालु गुप्त; गाजियाबाद, श्रीमान् आनन्द कुमार आर्य, श्री सुरेश चन्द्र आर्य, श्री दीनदयाल गुप्त, स्वामी (डॉ.) ओमानन्द सरस्वती, श्री बी.एल. अग्रवाल, श्री भवानी दास आर्य, श्री मिठाईलाल सिंह, श्री चन्दूलाल अग्रवाल, श्री कै. देवरत्न आर्य, श्री नारायण लाल मित्तल, श्रीमती आभा आर्या, श्रीमती शारदा गुप्ता, श्रीमती पुष्पा गुप्ता, स्वामी (डॉ.) आर्येशानन्द सरस्वती, श्री सुधाकर पीयूष, आर्यसमाज गाँधीधाम, आर्य परिवार संस्था कोटा, श्री राजकुमार गुप्ता एवं सरला गुप्ता, प्रो. आई. जे. भाटिया; नासिक, श्री श्रवण कुमार गुप्ता, श्रीमती ओमप्रकाश वर्मा; जयपुर, श्री कृष्ण चौपड़ा, श्री दीपचन्द आर्य; बिजनौर, श्री खुशहालचन्द आर्य, गुप्तदान उदयपुर, श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य, श्री लक्ष्मण सराफ, श्री मोती लाल आर्य, श्री रघुनाथ मित्तल, श्री जयदेव आर्य, स्वामी प्रवासानन्द सरस्वती, श्री नरेश कुमार राणा, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, श्री वीरेन्द्र मित्तल, श्री विजय तायलिया, गुप्त दान दिल्ली, प्रो. आर.के.एरन, श्री एम. विजेन्द्र कुमार टॉक, श्री विकास गुप्ता, श्री भारतभूषण गुप्ता, डॉ.मोतीलाल शर्मा, डी.ए.वी. एकेडमी, टाण्डा, मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कॉलेज, टाण्डा, श्री एम.पी. सिंह, श्री रामप्रकाश छाबड़ा, श्री प्रधान जी, मध्यभारतीय आ. प्र. सभा, श्री विवेक बंसल, श्रीमती गायत्री पंवार, डॉ. अमृतलाल तापड़िया, श्री लोकेश चन्द्र टांक, आर्य समाज हिरणमगरी, उदयपुर, श्री प्रह्लादकृष्ण एवं श्रीमती प्रभा भार्गव, डॉ. वेद प्रकाश गुप्ता, श्री वीरसेन मुखी, श्री सुरेशपाल, यू.एस.ए., श्री राजेन्द्र कुमार सक्सेना, कोटा, श्रीमती सुमन सूद, कन्डा घाट (सोलन), माता शीला सेठी, न्यूजर्सी, डॉ. एस. के. माहेश्वरी, उदयपुर, श्री राजेश तिवारी (शिक्षक), ग्वालियर, डॉ. पूर्णसिंह डबास, नई दिल्ली, श्रीमती सविता सेठी, चण्डीगढ़, श्री बृज वधवा, अम्बाला शहर, श्री हजारी लाल आर्य, उदयपुर, डॉ. सत्यप्रकाश, हरदोई, श्री राजेन्द्रपाल वर्मा, वडोदरा, प्रिन्सीपल डी. ए. वी. एच. जेड. एल. सी. सै. स्कूल, दरीबा (राजसमन्द), आचार्य आनन्द पुरुषार्थी, होशंगाबाद, श्री ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, नोएडा, श्री भरत ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, अहमदाबाद, श्री सुरेन्द्र कर्मचन्दानी, पुणे, डॉ. आनन्द कुमार शर्मा, नई दिल्ली, श्री रमेश चन्द्र गुप्ता, यू.एस.ए., श्री शुद्धबोध शर्मा; श्रीगंगानगर, श्री कन्हैया लाल आर्य, शाहपुरा, डॉ. सत्या पी. वार्ष्णेय; कनाडा, श्री अशोक कुमार वार्ष्णेय; बडोदरा, श्री नागेन्द्र प्रसाद गुप्ता, बगहा (बिहार), श्री गणेशदत्त गोयल, बुलन्दशहर (उ. प्र.), श्री पूर्णचन्द आर्य, कानोड़, श्री वेदप्रकाश आर्य; नई दिल्ली, श्री सत्यनारायण शर्मा; उदयपुर, श्रीमती राधा देवी-रतन लाल राजोरा; निम्बाहेड़ा, श्री सत्यप्रकाश शर्मा; उदयपुर, सुदर्शन कपूर; पंचकूला, श्री देवराज सिंह; उदयपुर, श्रीमती ललिता मेहरा; उदयपुर, श्री कृष्ण लाल डंग आर्य; हिमाचल प्रदेश, श्री जी. राजेश्वर (गौड़) आर्य; हैदराबाद, पुरुषोत्तम लाल मेघवाल; उदयपुर, श्री बलराम जी चौहान; उदयपुर, श्री राकेश जैन; उदयपुर, श्रीमती कमलकान्ता सहगल; पंचकूला, श्री अम्बालाल सनाढ्य; उदयपुर, श्री भँवर लाल आर्य; उदयपुर, श्री वेलजी धनजी भाई; महाराष्ट्र, श्री सज्जनसिंह कोठारी; जयपुर, श्री चेतन प्रकाश आर्य; जोधपुर, ठाकुर जितेन्द्र पाल सिंह; अलीगढ़, श्री घनश्याम शर्मा; जयपुर, श्री मानसिंह चौहान; डूंगरपुर, श्री अजय कुमार गोयल; पानीपत, श्री रामजीवन मिश्र; जयपुर, श्रीमती ममता आर्या; नई दिल्ली, श्री यश आर्य; कोलकाता, श्रीमती संचिता जैन; उदयपुर, श्रीमती कुसुम गुप्ता; सूरत, डॉ. बी.पी. भटनागर; उदयपुर, डॉ. अवन्त कुमार सचेती; उदयपुर, श्री अरुण अब्रोल; मुम्बई

समाचार

यज्ञ में आहुतियाँ देकर की नववर्ष की शुरुआत

आर्य समाज हिरण मगरी, उदयपुर की ओर से २० मार्च, २०२६ को भारतीय नववर्ष हर्षोल्लास से मनाया गया। श्रीमती सरला गुप्ता के पौरोहित्य में यज्ञ सम्पन्न हुआ। श्री ओम प्रकाश कुमावत, श्रीमती दुर्गा कुमावत, भंवर लाल आर्य, श्रीमती पुष्पा सिधी, कृष्ण कुमार सोनी, श्रीमती ललिता मेहरा, अम्बालाल सनाढ्य आदि ने यज्ञ में आहुतियाँ देकर राष्ट्र-विश्व की खुशहाली की कामना की। मुख्य वक्ता प्रकाश जी श्रीमाली ने नवसंवत्सर पर प्रकाश डाला। इन्द्रदेव पीयूष ने भजन प्रस्तुत किए। डॉ. अमृतलाल तापड़िया ने अतिथियों का स्वागत किया। कार्यक्रम का संचालन मंत्री वेदमित्र आर्य ने किया। प्रधान भँवर लाल आर्य ने धन्यवाद ज्ञापित किया। श्रीमती चन्द्रकान्ता यादव ने शान्तिपाठ व जयघोष करवाया।

दयानन्द कन्या विद्यालय की प्रधानाचार्या श्रीमती प्रेमलता मेनारिया के निर्देशन में छात्राओं व अध्यापिकाओं द्वारा आगंतुकों का तिलक लगा कर व मिश्री खिलाकर स्वागत किया। रामदयाल मेहरा, आनन्द माथुर, सुभाष कोठारी, नरेन्द्र माथुर, श्रीमती प्रीति चौहान, राधा त्रिवेदी, चन्द्र कला आर्य, नाजुक छाजेड़, देवेन्द्र आर्य, चन्द्रलेखा राठौर, रमेश जायसवाल आदि की सार्थक उपस्थिति रही। - रामदयाल मेहरा

श्री सुरेन्द्र कुमार आर्य जी सर्वसम्मति से सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान मनोनीत

सम्पूर्ण आर्य जगत् की ओर से हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ

गत वर्ष २६ अक्टूबर २०२५ को श्री सुरेश चन्द्र आर्य जी, प्रधान-सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के आकस्मिक निधन से संगठन के सबसे बड़े पद के रिक्त होने के बाद १२ मार्च २०२६ को अन्तरंग सभा की बैठक आर्य समाज हनुमान रोड के सभागार में आयोजित की गई। जिसमें लगभग समस्त प्रान्तीय सभाओं के अधिकारियों ने श्री सुरेन्द्र कुमार आर्य जी को सर्वसम्मति से प्रधान मनोनीत किया।

अंतरंग की बैठक में सर्वप्रथम सभी प्रान्तीय सभाओं के अधिकारियों ने श्री सुरेश चन्द्र आर्य जी के नेतृत्व और कार्य कुशलता की उन्मुक्त हृदय से प्रशंसा करते हुए अपने श्रद्धा सुमन अर्पित किए। इस अवसर पर पिछले तीन वर्षों में हुए विभिन्न ऐतिहासिक आयोजनों की वीडियो को देखकर सभी ने कार्यक्रमों की सफलता के लिए एक दूसरे को बधाई दी।

तदोपरान्त श्री प्रकाश आर्य जी ने सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के सेवा कार्यों और गतिविधियों को आगे बढ़ाने की बात कही, आर्य

प्रतिनिधि सभा मुम्बई के प्रधान श्री हरीश आर्य जी ने सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पद के लिए श्री सुरेन्द्र कुमार आर्य जी का नाम प्रस्तावित किया, गुजरात प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री वाचोनिधि आर्य जी ने अनुमोदन किया। उपस्थित सभी प्रान्तीय सभाओं के प्रधान, मंत्री, प्रतिनिधियों ने हाथ उठाकर ओ३म् ध्वनि के साथ अपनी सहमति प्रदान की। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के नव निर्वाचित प्रधान श्री सुरेन्द्र कुमार आर्य जी ने उपस्थित प्रान्तीय सभाओं के अधिकारियों का आभार व्यक्त किया और आर्य समाज के सेवा कार्यों को निरन्तर गतिशील रखने और आगे बढ़ाने की बात कही। प्रान्तीय सभाओं के अधिकारियों ने श्री सुरेन्द्र कुमार आर्य जी को हार्दिक बधाई और शुभकामनाएँ प्रदान की।

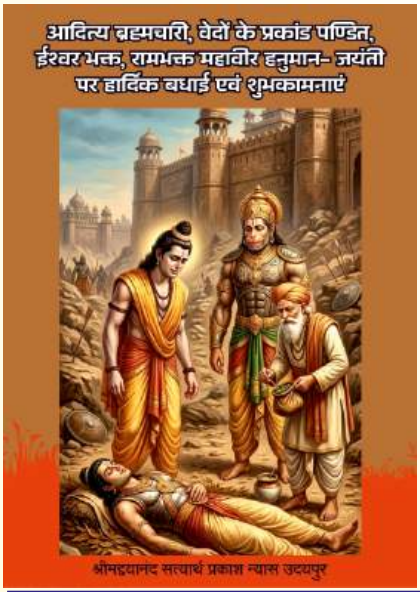

हलचल

कार्यकर्त्ता नींव के पत्थर

दिनांक १५ मार्च २०२६ को राष्ट्र मन्दिर लोकार्पण व सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव के आयोजन को सफल बनाने वाले कार्यकर्त्ताओं का सम्मान समारोह नवलखा महल, उदयपुर के माता लीलावन्ती सभागार में आयोजित किया गया।

यहाँ के नव प्रकल्प राष्ट्र मन्दिर का निर्माण महान् दानवीर पूज्य (स्मृतिशेष) महाशय धर्मपाल जी आर्य के पुत्र महाशय राजीव जी गुलाटी के सात्विक धन से यह अभूतपूर्व कार्य सम्पन्न हुआ है। परन्तु राष्ट्र मन्दिर के लोकार्पण व सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव को सफल बनाने हेतु दिन-रात यहाँ के कार्यकर्त्ताओं ने जो परिश्रम किया है वह अद्भुत है। इन कार्यकर्त्ताओं के बल पर ही आज नवलखा महल सांस्कृतिक केन्द्र अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बना पाया है।

नवलखा महल वर्ष १९९३ में जीर्ण-शीर्ण अवस्था में आर्य समाज को प्राप्त हुआ। उसको आज विश्व स्तर पर पहचान दिलाने, राजस्थान राज्य की पर्यटन की सूची में स्थान दिलाने तथा यहाँ स्थापित किए गए प्रकल्पों यथा आर्यावर्त्त चित्रदीर्घा, वैदिक संस्कार वीथिका, आर्य चलचित्रालय (थियेटर), भारत गौरव दर्शन, आधुनिक रूप में वैदिक साहित्य विक्रय केन्द्र, पंच महायज्ञों की पृष्ठभूमि (एफ आर पी रिलीफ) से युक्त स्वागत कक्ष, भारत राष्ट्र निर्माताओं के चित्रों को विभिन्न विधाओं में प्रस्तुत कर wall of fame का निर्माण, महर्षि अग्नि, वायु, आदित्य, अंगिरा को समर्पित मुख्य द्वार, वेद व महर्षि द्वारा व्याख्यायित सृष्टि-उत्पत्ति के थीम को आधार बना सत्यार्थ प्रकाश की रचना स्थली 'नवलखा महल सांस्कृतिक केन्द्र' के बाह्यस्वरूप का नव निर्माण, वेद वृक्ष का निर्माण जैसे प्रकल्प, यज्ञशाला इत्यादि प्रकल्प दानदाताओं के सहयोग से तैयार किए गए। परन्तु इनको मूर्त रूप देने व यहाँ की गतिविधियों को जन-जन तक पहुँचाने का कार्य अगर किसी ने किया है तो वे हैं यहाँ के कार्यकर्त्ता।

श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के उपाध्यक्ष श्री मोतीलाल आर्य ने कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए कहा कि मैं नवलखा महल की स्थापना से ही यहाँ से जुड़ा हुआ हूँ। मेरे पिताजी न्यास के संस्थापक अध्यक्ष स्वामी तत्त्वबोध सरस्वती के साथ यहाँ के न्यासी रहे। उनकी मृत्यु के उपरान्त मुझे यहाँ के न्यासी बनने का गौरव प्राप्त हुआ। न्यास ने बहुत कम समय में यहाँ विभिन्न प्रकल्प स्थापित किए। इसके लिए न्यास अध्यक्ष श्री अशोक आर्य ने दिन-रात परिश्रम किया है। आज उनके व उनकी टीम के प्रयास से ही प्रतिवर्ष लाखों की संख्या में पर्यटक यहाँ आकर भारत के गौरवशाली अतीत से परिचित होकर प्रेरणा प्राप्त करते हैं। यहाँ आर्य समाज से जुड़े लोगों के अतिरिक्त देश-विदेश के पर्यटक आकर प्रेरणा प्राप्त कर रहे हैं। जो प्रकल्प यहाँ स्थापित किए गए हैं, ऐसे प्रकल्प विश्वभर में कहीं नहीं है। इसके लिए दानदाताओं के अतिरिक्त यहाँ के कार्यकर्त्ताओं का भी परिश्रम है। मैं कार्यकर्त्ताओं का अपनी ओर से तथा श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास की ओर से आभार प्रकाशित करता हूँ और उनसे आग्रह करता हूँ कि वे यहाँ की गतिविधियों को नित नये आयाम प्रदान करने में आगे भी अपनी सराहनीय भूमिका निभाते रहें।

इस अवसर पर राजकीय मीरा कन्या महाविद्यालय, उदयपुर की पूर्व प्राचार्य डॉ. गायत्री पंवार ने भी अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहा कि यहाँ जो पुस्तकों का भण्डार और पुस्तकालय है वह विद्यार्थियों व शोधार्थियों के लिए प्रेरणा व मार्गदर्शन का कार्य कर रहा है। यहाँ के प्रकल्पों के माध्यम से विद्यार्थी प्रेरणा प्राप्त कर रहे हैं जिससे वैदिक संस्कारों का युवा पीढ़ी में संचरण हो रहा है।

उन्होंने बताया कि लोकार्पण समारोह व सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव के लिए कार्यकर्त्ताओं की विभिन्न समितियों को गठन किया गया जिसमें आवास व्यवस्था हेतु एनएमसीसी यूथ की संयोजक श्रीमती ऋचा पीयूष, श्रीमती भाग्यश्री शर्मा, सुश्री उषा चौहान, श्री जयेश आर्य की महत्वपूर्ण भूमिका रही। यज्ञ व्यवस्था हेतु पुरोहित श्री नवनीत आर्य, पुरोहित श्री इन्द्र प्रकाश वैदिक एवं श्रीमती चन्द्रकान्ता वैदिका की महत्वपूर्ण भूमिका रही। इसी प्रकार वित्त प्रबन्धन समिति के लिए श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के कोषाध्यक्ष श्री नारायण लाल मित्तल, श्री दिव्येश सुथार, श्री प्रवीण आर्य की, स्टेज व्यवस्था के लिए लिए न्यास के मंत्री श्री भवानीदास आर्य, न्यास के संयुक्त मंत्री डॉ. अमृतलाल तापड़िया की एवं श्री सुभाष गुप्ता, प्रचार-प्रसार हेतु न्यास के जनसम्पर्क सचिव श्री विनोद राठौड़, श्रीमती शीतल गुप्ता, श्रीमती सरला गुप्ता, श्री संजय शाण्डिल्य की, भोजन व्यवस्था हेतु वरिष्ठ न्यासी श्रीमती शारदा गुप्ता, श्रीमती ललिता मेहरा, श्रीमती आभा आर्य, श्रीमती उगान्ता यादव, श्री महेश मित्तल, श्री शोभित मित्तल, श्री लक्ष्मण की, नवलखा महल की सजावट हेतु डॉ. प्रशान्त अगवाल, डॉ. प्रिया अग्रवाल, सुश्री अस्मि अग्रवाल की, श्री राजीव जी गुलाटी के सम्मान में आयोजित मोटरसाइकिल रैली हेतु श्री चन्द्रशेखर के नेतृत्व में कई लोगों ने सहयोग किया।

कार्यकर्ताओं को उपरणा, शॉल व स्मृति चिह्न देकर न्यास अध्यक्ष श्री अशोक आर्य, न्यासी श्रीमती शारदा गुप्ता, कर्नल सोहनलाल, डॉ. अमृतलाल तापड़िया, न्यासी श्री मोतीलाल आर्य, डॉ. गायत्री पंवार आदि ने सम्मानित किया।

कार्यक्रम का संयोजन न्यास के कोषाध्यक्ष श्री नारायण लाल मित्तल ने किया और धन्यवाद न्यास के संयुक्त मंत्री डॉ. अमृत लाल तापड़िया ने किया और कार्यक्रम का समापन पुरोहित नवीनत आर्य के शान्ति पाठ के साथ हुआ।

- भंवर लाल गर्ग, कार्यालय मंत्री

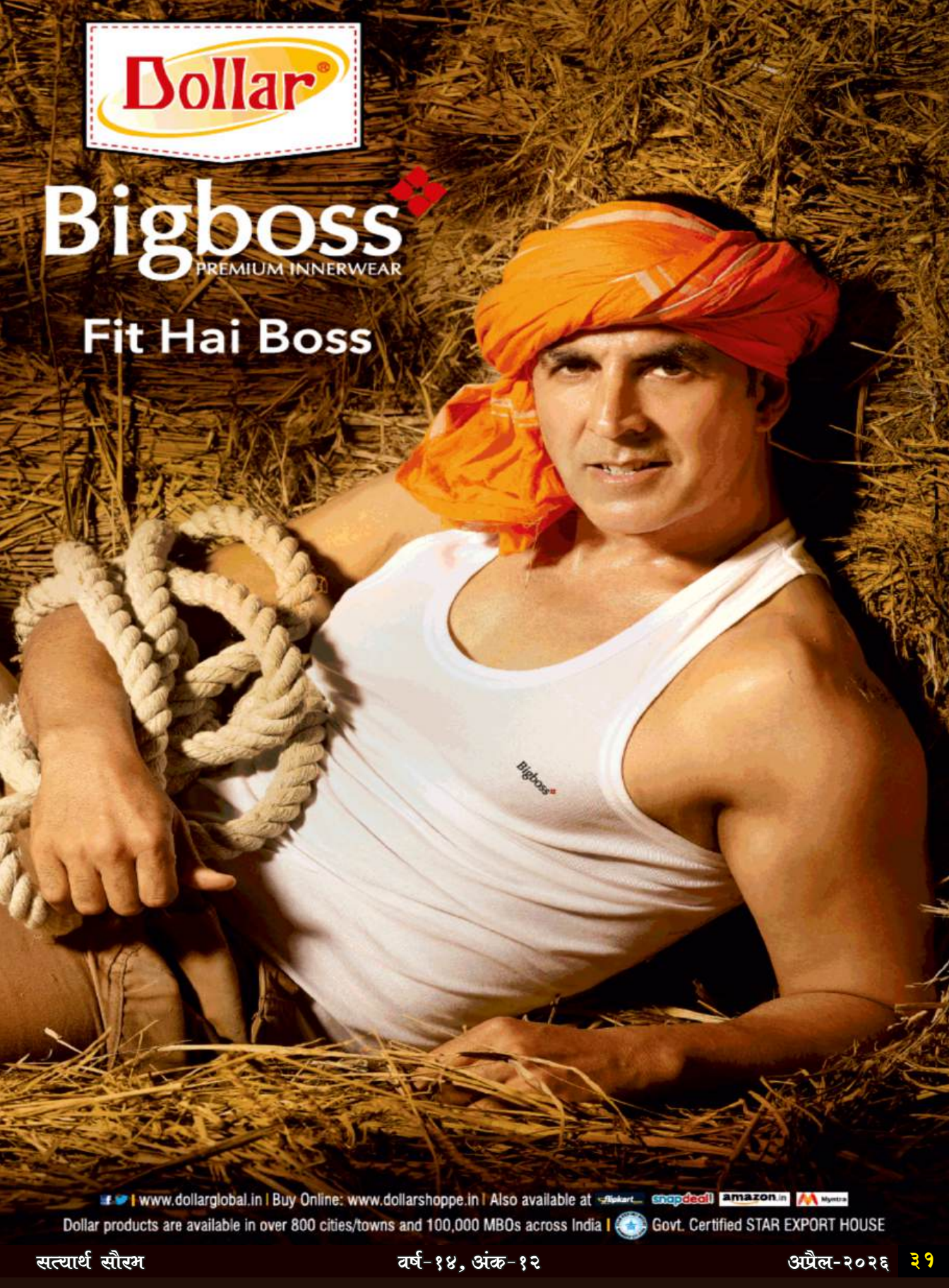
Dollar
Bigboss
PREMIUM INNERWEAR
Fit Hai Boss
Bigboss
www.dollarglobal.in | Buy Online: www.dollarshoppe.in | Also available at Flipkart snapdeal amazon.in Myntra
Dollar products are available in over 800 cities/towns and 100,000 MBOs across India | Govt. Certified STAR EXPORT HOUSE

RNI Registration No. RAJHIN/2012/47777 April-2026 Postal Registration No. RJ/UD/29-107/2025-2027

कभी विना पूछे वा अन्याय से पूछने वाले को कि जो कपट से पूछता हो, उस को उत्तर न देवे। उन के सामने बुद्धिमान् जड़ के समान रहे। हाँ, जो निष्कपट और जिज्ञासु हों, उनको विना पूछे भी उपदेश करे।

सत्यार्थप्रकाशः दशम समुल्लास पृष्ठ २६०

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा निदेशक- मुकेश चौधरी, चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित प्रेषण कार्यालय- श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य

मुद्रण दिनांक- प्रत्येक माह की ३ तारीख | प्रेषण दिनांक- प्रत्येक माह की ७ तारीख | प्रेषण कार्यालय- मुख्य डाकघर, चेतक सर्कल, उदयपुर